

गायेन जस देखेन

सियाराम मिश्र

नवनीत प्रकाशन
23 हीवेट रोड, इलाहाबाद

संस्करण
प्रथम, १९९४

काँपी राइट : सियाराम मिश्र

मूल्य : ५०-०० रुपया

प्रकाशक
नवनीत प्रकाशन
२३, हीवेट रोड
इलाहाबाद

मुद्रक
वैशालिकी प्रिन्टर्स
८८३/७ दरियाबाद, पुलिस चौकी
इलाहाबाद

GHAYN JASH DEKHAN
By : Shiyaram Mishra
Prise : Fifty Rupees Only



नवनीत प्रकाशन, २३ हिवेट रोड, इलाहाबाद

कवि की कलम से

मेरा जन्म गोला गोकर्ण नाथ के निकट ग्राम घरघनियाँ में सन् १९४२ ई० में हुआ था। यह अवधी भाषा का क्षेत्र है! किन्तु यहाँ की अवधी पर कन्नौजी का कुछ प्रभाव परिलक्षित होता है। हमारे घरों में कन्नौजी मिश्रित अवधी बोली जाती है। काव्य-यात्रा में मुझे यह लगा कि अपनी बोली में जितनी सहज अभिव्यक्ति हो सकती है उतनी खड़ी बोली में नहीं। व्यक्ति को विशेष रूप से कवि को हृदय की बात कह लेने में सन्तोष का अनुभव होता है। मेरी यह मान्यता है, यदि व्यक्ति हृदय से सरल नहीं है, उसका बाहर भीतर एक नही है तो वह चाहे विद्वान, धनवान या नेता अधिकारी भले ही हो जाय किन्तु कवि नहीं हो सकता। सहज अभिव्यक्ति के लोभ में ही अवधी में कविताएँ लिखी हैं।

गाँव प्रदेश तथा देश की राजनीतिक, सामाजिक गतिविधियों ने कवि को प्रभावित किया। प्रत्येक क्षेत्र में जो कुछ भी देखा परखा उसे व्यक्त करने का टूटा-फूटा प्रयास ही यह संकलन है। विविध विषयों से युक्त, जब इस संकलन की पाण्डुलिपि तैयार हुई तो शीर्षक की तलाश हुई। सर्व प्रथम धर्मपत्नी श्रीमती विजय लक्ष्मी मिश्र के सामने चर्चा हुई तो उन्होंने साँचु कहइया दाढ़ी जार' शीर्षक रखने का सुझाव दिया। कुछ दिनों के उपरान्त अग्रज डॉ० मोहन अवस्थी से भेंट होने पर उन्होंने कहा यह शीर्षक साहित्यिक कविताओं को समाहित करने में असमर्थ है। अतः पर्याप्त मंथन के पश्चात् "गायेन जस देखेन" को अन्तिम रूप दे दिया गया।

संकलन की पाण्डुलिपि अपने अग्रज डॉ० श्याम सुन्दर मिश्र को दिखाई, उन्होंने कहीं-कहीं पर कन्नौजी के प्रभाव पर आपत्ति की। पुनः अवलोकन किया गया और जहाँ तक संभव हो सका कन्नौजी से प्रभावित शब्दों को बदलने का प्रयास किया गया। फिर भी यदि कहीं पर कन्नौजी

शुक्ल का प्रभाव मेरी कविता पर कही-कही पड़ा है अत कवि श्री शुक्ल का ऋणी है।

मैंने अपनी सभी पुस्तकों की भूमिकाओं में यह स्वीकार किया है कि मै कभी अध्ययनशील नही रहा और कविता के पास पड़ोस से भी निकल सका हूँ, इसमे सन्देह है। जो कुछ भी बन पड़ा है वह माँ का प्रसाद ही है। हाँ, यह बात अवश्य है कि मुझे कविता के ब्याज श्री विष्णु कुमार त्रिपाठी 'राकेश' जैसे अग्रज तथा डॉ० आनन्द मंगल बाजपेयी जैसे विद्वान मित्र के रूप मे प्राप्त हुये।

श्रद्धेय डॉ० नामवर सिह, डॉ० सूर्य प्रसाद जी दीक्षित, डॉ० उमा शंकर शुक्ल, डॉ० देवेन्द्र मिश्र, डॉ० डो० एस० मलिक, डॉ० मुन्नू लाल पुरवार के प्रोत्साहन ने भी मुझे विशेष बल प्रदान किया है। नगर के रोटरी क्लब तथा व्यापार मण्डल के पदाधिकारियों का भी कवि ऋणी है। साथ ही साहित्यानद परिषद के साथियों विशेष कर सन्त कुमार बाजपेयी 'सन्त' श्री कान्त तिवारी 'कान्त' डॉ० के० बी० त्रिपाठी 'राही' के सहयोग का आभार मानता है।

हिन्दो साहित्य सम्मेलन के प्रधान मंत्री आदरणीय श्रीधर जी शास्त्री, कविवर श्री राजेश दीक्षित ने भी मुझे विशेष रूप से प्रोत्साहित किया है, कवि उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता है। अन्त मे स्मृति शेष पं० राजाराम मिश्र तथा बाबू अनन्त राम पुरवार के मार्ग दर्शन ने मुझे जो सबल प्रदान किया कवि आभार व्यक्त करने की औप-चारिकता से उनके योगदान को हल्का नहीं बनाना चाहता, मेरे परम मित्र स्व० श्री बालकृष्ण त्रिपाठी के पुत्रगण संगम प्रकाशन के स्वामी त्रिपाठी बन्धुओं का विशेष ऋण है, जिन्होंने पुस्तक को जन-जन तक पहुँचाने का दायित्व अपने ऊपर लिया।

मैंने पूर्व में कहा है कि यह संकलन मन की अनुभूतियों का सहज चित्रण है, अत: किसी को कोई आघात लगे तो बालक की तोतली वाणी मानकर मात्र कविता का आनन्द लेते हुये कवि को क्षमा करेंगे। सर्वेभवन्तु सुखिनः।

जय मानव

सियाराम मिश्र

मंगला देवी मन्दिर गोला/गोकर्णनाथ

जनपद-खीरी(उ० प्र०) २६२८०२

अनुक्रम

———

छाँड़ि तुमँइ न सहारा कोऊ

ध्यान धरौं कछु अइसोइ मातु,
कि दूसर कौनँउ ध्यान न आवै।
अइसी करौ किरपा ममतामयी,
जो जडता जग ते विनसावै।
मइया तुमँइ नहि देर लगै,
छिन मा जुग कै बिगरी वनि जावै।
कानि करौ कछु अम्ब न पूतु,
कपूत बनै तुमका लजवावै।

जो न मिली ममता अबको,
तुमरे समुहे अब रोइब नाही।
ठाढी रहौ चहै पानी लिहे,
तुमरे कहे ते मुँह धोइब नाही।
भूँखइ पैट गजौनन मेलत,
कौनिउ आस सँजोइब नाही।
देहौ न जो नरता वनिबा पवि,
भूलि हूँ मानुष होइब नाहीं।

छाँड़ि तुमँइ न सहारा कोऊ,
मन मा जहु आठ घरी अब आवइ।
गाढ़े को साथी वनी अब कौनु,
जो मइया न पूतु को साथ निभावइ।
तौनी तना रहिवा जग मा हम,
जौनी तना हमैं मइया बसावइ।
का कबहूँ जहु सभव हइ,
रिरुकइ लरिका महतारी न धावइ।

आगि क गेह ते आगि कै भोरुवा,
मुला बयसन्दर नाम धरइहै।
कौन भला जलु हइ जेहिमा,
चलि वारिधि वाँझ पियास बुझइहै।
चाहै बढ़ै जुगनूँ केतनौ,
रवि कै समुहें न कबौं टिकि पइहै।
पाइकै अच्छर दुइ तुमते,
तुमरे गुन छन्दन मा कवि गइहै।

लाज बचाइवे खातिर जो,
डग दुइ धरिकै चली आइहौ मइया।
साँचु हइ पूतु कपूतु भवा,
तुम काहे कुमाता कहाइहौ मइया।
हइ विसवासु हमैं भरपूर,
न बाँह हमारी छोड़ाइहौ मइया।
सूरज हइ सबका एकसै,
अँधियारे म ज्योति देखाइहौ मइया।

●

उपजाऊ करि दै भुँइ बदरा

सुख का करै अकासु बरसु रे
सामबेद हुइ कठ सरसु रे
कबौ न बुढ़िया होइ जवानी
बनी रहइ जह बोली बानो
घट-घट मा भरि-भरि दे अमिरत
हरे रहँइ हाथन के गजरा
उपजाऊ करि दै भुँइ बदरा।

घूँघट मा चितौनि ना बूड़इ
कौनउँ ना किसान का मूँडइ
हूक न होइ निआउ की छाती
बिन सनेह ना टूटइ बाती
रस रस चुअइ पियारु नयन ते
जुग जुग जिअँइ घरन मा नखरा
उपजाऊ करि दै भुँइ बदरा।

रहइ हौंसिला आस न टूटइ
गाडी धीरज केरि न छूटइ
जल-थल नेह बँसुरिया बाजै
गेहूँ लिहे देवारी राजै
भारत कै कीरति नित बाढ़ै
रहइ सुकालु परै ना पटरा
उपजाऊ करि दै भुँइ बदरा।

●

हम कलाकार हन भारत के

जीवन कै ब्रदलेन धार हुँकारि
निज प्रानन का उतसर्ग कियेन
कठिनाई केर पहाड़न पर
फहराइ धुजा हँसि खेलि जियेन
मानेन न साँच मा आँच कबौं
दिढ़ कलम चलायेन औ' भोंकेन
जिउ ते पियार भारत कै बदि
आपन सुख भट्ठी मा झोंकेन।

जब जाति-धरम पर बनि आई
जब करिया धन्धा ललकारिनि
चन्दन ते पावन माटी पर
जब रिपु तिरछी निगाह डारिनि
तब हमरी कलम मसाल लिहे
पानी मा आगि लगाइ दिहिसि
जो बाघ नींद मा रहँइ परे
उनका हुड़बंगि जमाइ दिहिसि।

जब मोंहु भवा हिम्मति हारेन
तउ गीता सुन्दर दिहिसि ज्ञान
झट समर भूमि मा कूदि परेन
सब मरइ जिअइ का छाँड़ि ध्यान
जगि परेन चन्दबरदाई मा
बनिकै भूषण आगे आयेन
बिसमिल ऊधमसिंह राजगुरु
हुइ भगत क्रान्ति कै गुन गायेन।

गायेन अ







भिजई बिलार न बनेन कबौं
प्रन पालेन नित स्वच्छन्द रहेन
परवत कै छाती बज्र फोरि
जग देखि चुका अनबरत बहेन
हम कवि हन भारत कै सपूत
पतझर का नव मधुमास दिहेन
घुट्टी मुर्दा आदर्शन कै—
हइ साँचु न कबहूँ भूलि पियेन।

गरदन कटि गइ मुल रुकेन नही
अंगार कविता ते झारेन
हन युग-बानी कै आराधक—
लड़तइ मरिगेन मरतइ मारेन
जब अनुशासन कै टिकटी मा
शासन कै लासि देखाइ परी
फुंकिगा निआउ का जब इंजन
बेइमानी झंडी दिहिसि हरी।

फूलन कै बदले मन्दिर मा
जब करिया काँटे गड़ै लाग
घट मा अमरित के फनु काढे
गोरे भुजग जब बढ़ै लाग
राक्षसी काम की क्षुधा लिहे
नोचिनि पुहुपन का जब भौंरा
तउ कवि आपन सन्देसु दिहिन
भूला भारत कुतिया मौरा।



धरम हइ नेतन का हथियार

दुनियाँ भरि कै मन्दिर मसजिद
कब छँडिहैं गुरुद्वारा जह जिद
मठाधीश बँचँइ ईसुर का
फैलावँइ ब्योपार
धरम हइ नेतन का हथियार।

रहेन रेल की दुइ पटरिन अस
कहेन मुला प्रेमइ ते सरबस
सब ब्बाटन बदि पीटँइ ढफली
कुरसी की तकरार
धरम हइ नेतन का हथियार।

जेहिका देखउ परेसान हइ
पाँउ थके मुँह बियाबान हइ
जुलुम सहति सब उमिरि बिजारेन
झूठइ हन हकदार
धरम हइ नेतन का हथियार।

मेहनति की जह नाव न बूड़इ
गैतल का मोटकवा न मूँडइ
धरती नभ बनि गोइया गावैं
सरगु बनै संसार
धरम हइ नेतन का हथियार।

बनँइ न घर जइ जेल हमारे
मन ते मानुप होइँ न हारे
एक धरम जह दुनिया मानै
बजइ प्रेम को तार
धरम हइ नेतन का हथियार।

●

अइसे मास्टर का नमस्कार

सिच्छा अस अदिमी की पूँजी जेहिका ना चोर चोराइ सका
खरचे ते बाढ़े नित्त और ज्ञानिन का को भटकाइ सका
मानेन स्वतंत्रता पायेन हम, हुइ गेन स्वतंत्र फिरि फटकटाइ
यूनियन बनायेन दिढ अपनिउ निकसेन सड़कन पर बजबजाइ।

अस गगन-फार, बकवाधि किहेन नारन कै दफ्ती लिहे हाथ
लरिका किलकिला देखिनि हमरी लइ नवा जोश हुइ लिहे साथ
सोंचेन हमहूँ नौकरी बनइ चीनी जूता अस फौलादी
यहि सासालीदी मा कब लौ पिसिहैं मेहरारू औलादी।

कलजुग कै ढाल संगठन हइ हाकिम हरहा ना छेड़ि सकैं
साथइ हर साल नतीजा कै दइ नोटिस नाँहि खदेड़ि सकैं
रुपिया को पायेन महामत्र शासन ना अब दुरिआइ सकइ
हम चहैं जो करी हन स्वतत्र परबत का कौन हलाइ सकइ।

परबन्ध कमेटी हइ हमार ना ओहिका कुछ अधिकार रहा
सरकार बनी वेतन दाता चोरइ हुइ पहरेदार रहा।
अनुशासन सब हुइगा त्रिशंकु हम आपनि मौजइ मार रहे
अब हुकुम अइस लागँइ हमका जइसे रद्दी अखबार रहे।

फैसन दुनिया कै देखि देखि हम अदबदाइ भेन दीवाने
तोरेन अभ्यासी को रिकॉट करतब अपनायेन मनमाने
पहिले टिउशन मा मेहनति करि निपटेन कुछ दिन महँगाई ते
अब तौ बिरकुल जिउ भाजि गवा हइ लागति हमैं पढ़ाई ते।

सब छाँड़ि पढ़ाई दुनिया की हर गतिविधि ते मतलब हुइगा
हम हुइगेन गुण्डन कै गुण्डा ना शिष्टाचार रंच छुइगा
कुछ पालेन लरिका सड़कछाप मँझलौखे बोतल खोलइ का
फिर बकइ लगेन हम अन्ट-सन्ट केहिकी हिम्मति अब बोलइ का।

याराम मिश्र गायेन जस देखेंन

ठेका लइ लइ फिरि लगिबन का झूठे नम्बर दइ कियेन पास
लरिकउ लइ डिगरी रहे चाटि अनि गयी नौकरी नाग फाँस
सब चरै भेजि आदर्शन का बसि गेटा की देखेन दुनिया
हुइ गयेन गुनन ते बहुत दूरि रहि गयेन गियरकइ निरगुनिया।

अब रोउ रहेन मम्मानु मिलइ हम गुरु देश कै कर्णधार
हमका निहारि कहि रहे लोग अइसे मास्टर का नमस्कार।

चेतु रे भारत केर किसान

कटवाइनि सब तोहरेइ नेत
ऊन निकासिनि मारिनि बेंत
महल रहे मुसकाइ देखि के
सब दिन तोहरइ सूख परान
चेतु रे भारत केर किसान।

नेता तिकडम ताल भँजाइनि
ऊँच मचान बैठि हुरिआइनि
तोहिकइ जानि बेलवा जोतिनि
सुधा बाँटि खाइनि पकवान
चेतु रे भारत केर किसान।

धरम बताइनि रारि कराइनि
मन्दिर महजिद मा भरमाइनि
स्वारथ कै अस पुंजी खोलिनि
नदी कटिसि आपन जल पान
चेतु रे भारत केरि किसान।

लिखा किताबन मा जन तन्त्र
सबद सबद मुल हँइ परतंत्र
श्रम कै देउता तड़पैं बिलखैं
काहिल हँइ श्रीमान—।
चेतु रे भारत केर किसान।

यहै दुखन दुबरे हन

हम बसि यहै दुखन दुबरे हन
फेरि न लौटि गवा सुखु अइहै।

अपनी धुन मा दादुर बोलँइ
झींगुर जीवन मा रस घोलँइ
पलकन मा उबलति लइ सपने
जानैं कब सरिता उफनइहै
फेरि न लौटि गवा सुख अइहै।

बरखा मा बाजार मँझायेन
धूप छाँह मा खेलि गँवायेन
मान मनौती किहे न पायेन
पंथु जहाँ ना मनु लँगड़इहै।
फेरि न लौटि गवा सुख अइहै।

बेलि चढ़ै बिरवन के ऊपर
चातक गढ़ै कथा नित भू पर
नई लिहे परतीति पिकी कब
जुग बदि नवा सदेसा लइहै
फेरि न लौटि गवा सुख अइहै।

बिजुरी बुँदन की अइ चोटैंइ
भूधर ढोवैंइ हिम की बोटैंइ
मौसम-जाल फँसी गौरैया
कब निरमल नभ उड़ि उड़ि पइहै
फेरि न लौटि गना सुख अइहै ।

●

आँगन का घाम

फुफकारै आँगन कै घाम
भट्ठी की लपट भई साँस
सूखि सूखि गन्ना भे बाँस ।
सब करेजु तालन का फाट
बिरिछ लगैंइ ठूँठ अस उचाट ।
लुअँइ करिनि पथ की गति जाम
पौरुष भा शीत कै बेराम ।।

कमरन मा बन्द दोर धूप
गनचट मुँह वाइ भे अरूप ।
परदेसी सहि न सके ताप
बैठि रहे छवि गृह चुपचाप ।
कसमसान खेतन मा काम
सबद गये खोलि खास आम ।।

सड़क भई अगिया बैताल
खूँटा का तोरि भजा काल
सुखी भये राधा कै श्याम
लटकन की छाँह कै गुलाम ।
पसरि रहे बिसरे जो नाम
हफ्फि रहे जन मन कै राम ।।

●

भगवानइ देस चलाइ रहा

भीतरै भीतर जल कै लाइन सीवर कै लाइन ते मिलि गइ
घर की टोंटी ते मल निकला रहतुति गन्दिगी ते हिलि गइ ।
जब आगे थोरी दूरि चलेन औरउ बिकासु कुछ देखि परा
कूरा के ढेर खखोइ रहे दुइ नौनिहाल कटरा बछरा ॥

सीवर कै गडहा मा गिरि कै मनेंई देखेन चिल्लाइ रहे
समुहे दुइ कौड़ी कै जोगी सब भूत भविष्य बताइ रहे ।
होटल मा गयेन खाइ खातिर तउ आइ गये लकदक बैरा
बोले बाबू जी का खइहउ ना खाँड हियाँ नत्थू खैरा ॥

दस बीस किसिम के भोजन उइ छिन बित्तर माँहि गिनाइ गये
पानी पियाज मिरचा सलाद बिन कहे तुरन्त सजाइ गये
जो जन समुहे तन खाति रहँइ अस लगा कि उइ भिभिआइ परे
जइमे करण्टु बिजुरी मारिसि डेरभुते ठाँढ घिघिआइ परे ।

बकरा कै बोटी के धोखे लरिकन कै अँगुरी देखि परीं
हाथन मा उनके कौर रहा जरिगे परान सब भूख हरी
तुरतइ छी छी करि बाहेर भेन होटल का देखि लियेन खाना
बच्चन का मासु बिकाइ लगा तब यहौ नई किरिला जाना ।

एकन ते बोलेन ओं वहिनी उइ बोले हमका दइ गारी
हम बाप अहिन यहि लरिका कै तुम कस समुझे हौ महतारी ।
तब देखेन एक पगलिया का सब कथा सहर की बाँचि दिहिसि
देखतइ हमका उँचियान पेटु भारी पाँवन ते नाचि दिहिसि ॥

जगली जानवर ई मानुप कुछ अन्ट सन्ट बोलइ लागी
मनमा सोचेन फटिगा बादर, सभ्यता नई खोलइ लागी ।
उप्पर कोठी अगाम छुअँइ नीचे नालिन पर बइठे नर
कुछ काटँइ दिन फुटपाथन पर कुछ आतप सहे ओलँइठे नर ॥

गारेन जस देखेन ।

[...]राम मिश्र

बाहेर हँइ पौडर क्रीम मले भीतर कोइला कै खान लिहे
जइ महानगर के रहवैया साँपन की जीभ पुरान लिहे।
हँइ बडे बड़े जन बूड़ि गये इन मटमइले व्योपारन मा
जो पक्के छिनरा रहँइ नौन डोली के संग कहारन मा ॥

जरि गयेन देह का विकनि सुनेन ऊँचे कोठन पर खुले आम
होटलन मा कालगर्ल बनिकै नारी भारत की करँइ नाम।
कुछ मिले कि जिनका कामु यहै अफसर मंत्रिन के ढिग आवँइ
बड मिरसिकार परिवारन ते लरिकिनी पटावँइ पहुँचावँइ ॥

जोदानर का मन्तव्य मिला रुपिया पइसा अउ रोटी हइ
दुनिया बाहेर ते सुघर बड़ी मुल भीतर बहुतै खोटी हइ।
कहुँ सट्टा का व्योपार मिला कहुँ बातन का बाजार मिला
ना पायेन किरन सरलता कै चौतरफा ते अँधियार मिला ॥

जइ थाने जिनकी कोठरिन मा चीखइ मरिकै हुइ गयी बन्द
राक्षसी काम के भूखन मा नुचि गये फूल लुटि गे मरन्द।
नाली कै दाँती पर अटकी झोपड़ी एक फिरि देखि परी
बातइ सुनिकै दुइ लरिकन की अफसोस भवा अउ गाज गिरी ॥

लरिका बोला बप्पा बप्पा अब कब कौनउ घर मा मरिहै
तबहें भोजन बढिया मिलिहै जब कौनउ सेठि दया करिहै।
जब मझिले चचुआ मरे रहँइ मिठलोने व्यंजन दिहिसि रहइ
ओहिकै बदले दुइ चार दउस बेगारि अकड़ि कै लिहिसि रहइ ॥

चिमनिन का घुसि कै धुआँ पिअँइ हँइ आपनि हड्डी कूटि रहे
बोइ ऊपर थंपर टूँगँइ ठाढे औसरवादी सुख लूटि रहे।
कबि कै सामर्थ नही येतनी भीतर का बाहेर लइ आवइ
परदा कै पाछे की लीला को कहइ और केहि विधि गावइ ॥

सबदन मा ऋषि रहि गइ केचुल भगवानइ देस चलाइ रहा
बापू बाचा का बेचि रहा उनहे की कसमैं खाइ रहा।
हँइ जनता का भरमाइ रहे भारत कै साख गँवाइ रहे
ई नेता कुर्सी कै खातिर हँइ धमकच्चरु मचिआई रहे ॥

धरम कै खातिर तुम इन्सान बनौ

बनी रहइ जइ धरा शान्ति की फुलबारी हौ चाहति जो
बनी रहइ भारत की धरती महतारी हौ चाहति जो
पाँवन केरी थकनि बटोरे जिअँइ परान अगर चाहौ
बजइ गीत मुरली के सुर मा हे श्रीमान अगर चाहौ
गीत गजल दोनउ मा निखरउ
नर हुइ ना शैतान बनौ।

देखि चुके हौ अस्त्र-शस्त्र तुम ढेर लगे पूजा घरमा
प्रतिमा ते बढ़िके महन्त हँइ नौकर बने बिश्वकरमा
आये दिन नीलाम होति ईमान देखि डारेउ तुमहैं
बिकति रोज भगवान देखिकै तीनि साखि तारेउ तुमहे।
अगर न चाहौं उजरै बगिया
तुम भुँइ का बरदान बनौ।

काँटे बनिहैं फूल अगर दिल मा रहि जइहै रंच नमी
हियाँ न हिंसा कबौ प्रेम के दरपन पर बनि धूरि जमी
मस्ती कै मन जहाँ हुआँ आँधी अइहै तउ थमि जइहै
जीवन की सौगाति पाइकै मूरख मानुष रमि जइहै
चाहौ जो न कटइ नित सूरज
नेहौ हिन्दुस्तान बनौ।

भेद भाउ हइ हियाँ न कौनउ एकइ साँझ बिहान हियाँ
एक बाप कै सब लरिका हँइ एकइ हइ भगवान हियाँ
पिअइ जो चहै सुधा प्रेम की जइ जगती भिनसार की हइ
छाँडि दिहिसि अभिमान जौन जन धारा तेहि करतार की हइ।
चाहति हौ जो मारग सूधो
बाँटउ जोति महान बनौ।

जानै कौन सिन्धु कै ओंर छिन मा जीवन बहि जइहै
कौनी टीसन ट्रेन साँस की बिना निमंत्रन रहि जइहै
बिना बनाये सहज बोलना यहि मकान ते छूटि जइहै
वैभव लिहे रूप को गाही कौन राह मा लुटि जइहै।
बुनौ न कबहूँ यहि ते उलझन
परहित कै प्रतिमान बनौ।

●

देस के प्रानन मा उतरउ

तुम झरना अस झरउ
देस कै प्रानन मा उतरउ।
गंध लुटावउ हृदय बसै जो
बाँटउ आपनि हँसी हसँइ जो
चम्पा अस देही कै भीतर
रहि रहि तुम निखरउ
देस कै प्रानन मा उतरउ।

उड़इ पराग गाँव गल्ली मा
ज्योति मलउ कल्ली-कल्ली मा
मानुष जीवन मिला जिअइ बदि
अमरा मौत मरउ
देस कै प्रानन मा उतरउ।

आँगन केर अकास तुम्हारो
मधुर चाँदनी रास तुम्हारो
किरच किरच करि गहन अँधेरो
बुनउ सवेर, बुनउ
देस कै प्रानन मा उतरउ।

आपनि बोली मा रसु घोरउ
भुँइ पर रहउ नखत ना तोरउ
पथरन ते निचुरउ गगा अस
निरभय हुइ बिचरउ
देस कै प्रानन मा उतरउ।



हम बसन्त के फूल बनी

जीवन केरि नई परिभाषा
मुँहबोला मौसम बाँटै
गन्ध सनी जह हवा नित्त
चिन्ता कै रूखन का काटै
नहीं नेह कै बिरवा उखरै
नदी बनी हम फूल बनी

दुलराइति काँटे पलकन ते
जिअइ न सुल जगल उर मा
सपने मा न पीर खटकावै
बजै गीत नूतन सुरमा
नई फसल अस नित मन बाढै
भूलि न कबहुँ बबूल बनी

जब बिनास कै छाती चढि कै
नाचैं सिरजनहार नये
कारि कोइलिया रागु निकासै
चिट्ठी बाँचै भोर भये
बलि को पन्थु जौन नर नापै
उन पाँवन की धूल बनी।



दिया टिमटिमाइ लाग

कुर्सी कै हवा लगे दिया टिमटिमाइ लाग
परबत अस मनु मानो धूरि मा बिलाइ गा
स्वारथ की भीर लगी साँचु जनु घिनाइ गा
बाला भइ जीभ अपन
सबद गिड़गिड़ाइ लाग।

देउता परसादु पाइ अपनैं सब खाइ गवा
अकड़ि-अकड़ि चलइ बयार मौसम फिरि आइ गवा
बादन का कुंभकरन
जगि कै मुसुआइ लाग।

दीमक भइ राजनीति गीता के पन्नन पर
बातन के फूल झरँइ सीस मा घोटन्नन पर
रूप देखि रावन को
दरपन भिभिआइ लाग।
कुर्सी की हवा लगे
दिया टिमटिमाइ लाग॥

गणतंत्र पिआरो प्रानन ते

नित नई महाभारत देखउ गणतंत्र दौस की बेला मा
बसि पढउ पहाडा ब्वाटन का कुर्सी के ठेलम ठेला मा।
जिनके गरजन ते फटा गगन उइ नारा कनौ बिलाइ गये
जो रहँइ छकाउति भुँइ हमारि उइ बादर सूम उडाइ गये ।।

तब रहँइ दहाडति बाघ अइस शोषण अउ भ्रष्टाचार देखि
डेरभुते लगँइ उइ पहुँचि हुआ करिया परवत अँधियार देखि ।
जो सत्ता लड़ि झड़ि कै पायेन झूठे मुधार मा धँसि न जाइ
चीरइ जो कौनउ लहरि लगी गहिरे दल-दल मा फँसि न जाइ ।।

यहि डर ते भइया जौन होइ बोलिबा ना कुर्सी बची रहइ
आतकवाद और रिसबत की पाँवन मा मेहदी दी रची रहइ।
कहुँ मँहगाई मुँह बाइ रही कहुँ जलम भूमि का झगड़ा हइ
सब लौटि पौटि हुअनँइ ठाढे जो गाल बजाबइ तगड़ा हइ ।।

पजाब केरि किरिला दुनी चौगुनी रात दिन होति जाति
हम खाली गाभिन बातन मा अटके हन जोरे कुछ जमाति
मुर्दा तउ सब एकसै देखान बसि बदलि-बदलि कफनु आवँइ
जब मौत ठाँढि समुहे ताकइ तउ करँइ खुशामदि मुँह बाबँइ।

सागर की बातैं कौनु करै ओथले पानी मा बूड़ि रहे
झडा रंगु चाहैं जौन होइ सब मिलि जनता का मूड़ि रहे
हइ जौन देस मा भेदु नहीं इत्या मा अउ कुरबानी मा
सच्चाई जहाँ लुकाइ रहइ आतंकबाद कै बानी मा।

कवि माँगि रहा है कमते कम बलिदान करौ बदनाम न अब
गणतत्र पिआरो प्रानन ते हँसि खेलि कौर नीलाम न अब।



सागर देखेन

आजु रस भरा सागर देखेन

बनि अकाम लहरइ जो हिय मा
चाह कि निस्त रहइ जहु जिय मा
नाचति नटवर नागर देखेन
आजु रस भरा सागर देखेन ।

तट ते चलेन नाउ भुल भूलेन
लहरन की बाहन मा झूलेन
अंग जग रूप उजागर देखेन
आजु रस भरा सागर देखेन ।

जबहिं थमा ननिकउ कोलाहल
बँधे काल तीनउँ एकइ पल
घुटुअन चलत छपाकर देखेन
आजु रस भरा सागर देखेन ।

कलप बिरछ कै मिलो गाछ जब
बहि गइ मन की पूछ ताछ सब
मुखर मौन कै आखर देखेन
आजु रस भरा सागर देखेन ।



बूढ़े बिरिछ तुमँइ पहिचानेन

गये बिलाइ हिये कै जगल
छूटि परे खग नसा अमगल
यहु जीवन छिन जियना मानेन
बूढ़े बिरिछ तुमँइ पहिचानेन।

उडि-उडि आपन पख पम्गरेन
कइ अभिमान अकास भिजारेन
निज करतूति समुझि हठु ठानेन
बूढे बिरिछ तुमँइ पिहचानेन।

सबदिन दिहेउ सहारा तुमहे
नाउ-कूल-मझधारा तुमहे
तुमरोइ जगत पसारा जानेन
बूढे बिरिछ तुमँइ पहिचाने।

वाहेर भीतर एकइ दुनियाँ
भयेन पुलकि साँचउ निरगुनियाँ
बाघ-गुफा यहु तन अनुमानेन
बूढ़े बिरिछ तुमँइ पहिचानेन।

सूखि गयेउ अब ना हरिअइहौ
औसर पाइन फिरि धरि खइहौ
छाड़उ पिन्डु बहुत अकुतानेन
बूढे बिरिछ तुमँइ पहिचानेन।



बरखा

बरखा रितुअन कै रानी हइ
वरसाइति पूजा अन पावनि
राखो अस अनिशय मन भावनि
नीके दिन केर बोलउआ जस
जह साँचु वेद कै बानी हइ
बरखा रितुअन कै रानी हइ।

मोरन कै पाँवन ते नाचै
बदरन ते ममता का बाँचै
धानी अति गाढ़ि चुनरिया मा
लहराइ रही भरि पानी हइ
बरखा रितुअन कै रानी हइ।

चुलबुली काम कै सपन तरी
रसकै मूरति तनि कमक भरी
धरती की थकनि पलोटि रही
लरिकन कै मीठि कहानी हइ
बरखा रितुअन कै रानी हइ।



चन्दा मामा

तुम महतारी कै भाई कइसे तुमका दुरिआई
मुल तुमका आइ तपेदिक तउ कइसे नेहु लगाई।
रोगन ते कौन निभाइसि यहि जग मा नातेदारी
नीके कै गाहक सब हँइ दुनिया कुरूप दुखियारी ॥

जब पहिले पहिले देखेन तउ सपना जइसे आयेउ
अनजाने मा मन भायेउ फिरि रहि रहि रसु बरसायेउ।
तुम घटइ लगेउ पल छिन मा घटि घटि कै अन्त बिलायेउ
हमरे चिन्ता नब जागी दुविधा मा चित्तु फँसायेउ ॥

चच्चुआ हकीम ते पूछेन जइ कइसे हुइगे मामा
सिरकिट्टी हुइ कै छिपिगे आपन समेटि पइजामा।
बोले हकीम जइ रोगी हइ इनँइ तपेदिक भारी
इनका जग नहूँ न छाँड़इ जानइ मरिहैं महतारी ॥

अबहूँ अकास मा आवँइ तउ आपन रूप देखावँइ
लइकै कनियाँ मा हमका मामा कै कथा सुनावँइ।
कहुँ कहँइ थार, सोने का कहुँ अमिरत भरा पियाला
चाँदनी तुम्हारी माँई जइ हँइ बप्पा कै साला ॥

तारन मा नाचु देखावै जब ताकँइ कोकाबलियाँ
जइ मामा हँइ मनमौजी मुसकाइ करँइ रगरेलियाँ।
माँई हँइ भोली भाली अस नटखट दुलहा पाइनि
या भारत कै कन्या का देउता मिलि खूब ठगाइनि ॥

अम्मा बोली धनिबरसा चाँदनी तुम्हारी माँई
जो पति के साथ सती हैं अउ सावट मा झरिअइहैं ।
जह जनम जनम के जोगी अर्थानि मा जीहइ मरिहै
दोनउ का त्रिभुवना बाँधिहै दोनउ का मन्दर नरिहै ॥

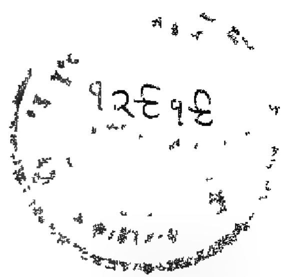
इइ प्रेम जगत का स्वामी जेहिकी सब थाह न पावै
यह सबने बड़ी कमाई जो [illegible] गवै लगावै ।
कुछ बाँधे ज्ञान गठरिया मौ नइहर [illegible] बस्ता मा
पाथर अउ गड़हा पाइनि आपन खोजी रस्ता मा ॥

तुम कहेउ कि दूध बनागा जउ मामा लड़कै अइहैं
मुल का गड़हन ते मट्या । अब जउ गड़्या उगजइहैं ।
जो सूतु बैठि के कातइ बुढ़िया मामा कै छाती
जहु जाइ कहाँ सब कपड़ा ना कौनउ मन सँघाती ॥

नौकरी करँइ सब प्रभु की सब समुझाइसि मझनारी
बस एक नचावनहारा जग नाच रहा इइ नारी ।
सब सूतु इकट्ठा कइके भगवान गोदाम बनावै
जब होंइँ दुरपदी नंगी उनका थोरा पहुँचावैं ॥

मामा बेराम बनि बनि कै यू दुनियाँ समझावैं
जइ दुख कै दिन ना रहिहैं जो सुख के न रहि पावैं ।
चाँदनी काम की तपि कै अग जग का भोज बनावै
लइ जरी मौत कै बटुली जीवन का हाथ छोडावै ॥

करिया सफेद कै जोड़ा करि कै यहु काल विभाजन
यहि लुका छिपी की विधि ते जगदीश्वर के आराधन ॥



बोलावति हमैं

न जानै कौन बोलावति हमै
धोवाई चादरि जइसी राति
दून रवि कै जुगनू हुलसाति।
ओस मा देही भिजये पात
करइ अउरउ बयारि कुछ घात।
गमकि बेला बहकावति हमैं
न जानै कौन बोलावति हमै ।।

रहे छपरन मा सपने मोड़
पाँउ मा काँटे खोवरे बोड़।
थकनि मा काम मचावै रारि
नवोढा बिहँसै मन का मारि।
नींद ते कौन जगावनि हमै
न जानै कौन बोलावति हमै ।।

साँस कै आवा जाही बढै
सिमिटि सन्नाटा मूडे चढै।
कमल मा हुइगे भौरा बन्द
एक झींगुर गावै बसि छंद।
अकेले समि मटकावति हमै
न जानै कौन बोलावति हमै।

जइस खंडहर या बिजुरी होइ
रहो झुरिन का सिरजन ढोइ।
राह निसुसै मंजिल की बाह
होइ जस लोभ जज्ञ कै छाँह
टपकि महुआ सनकावति हमैं
न जानै कौन बोलावति हमैं ।।

●

सियाराम मिश्र

बिन पइसा ज्ञानी उल्लू हइ

हिरनाकुस कै अस बाथा आइ अभिमान रहइ जेहि की पूँजी
ईसुर ते बढ़ि कै मानि रहा कइ सकइ कौन तेहि की दूजी
हइ हुकुम बड़ा भगवानौ ते मन मा जेहि कै बिसवासु जमा
सनकारिसि जेहिका चला तौन रोंकिसि इशिन करि वहै थमा

सब पिता सुतन ते कहइ लाग व्यभिचार करउ व्यभिचार करउ
जेहि की बदि धरती पर आयेउ ना सुविधा पर अंगार धरउ।
सच्चाई की फुलवारी मा अधरम की आगि लगाइ देउ
जो बचा खुचा पावौ निआउ उनपानु सकेलि भगाइ देउ।

पूँछी को ज्ञान तुमारो जहु बिन पइसा ज्ञानी उल्लू हइ
यहि जग मा मानी धरमिन बदि बूड़इ का जल दुइ चुल्लू हइ।
तुमरे सोचना कै खातिर जो कौनउ लरिकी बाले अइहैं
जो पइहैं तुमका धरमपाल गउ हाथ मींजि के पछितइहैं।
बप्पा बोले लरिकउना ते छाँडउ जन साँचौ राह पून
बेइमानी चोरी रहजनी हइ कौनउ नहीं गुनाह पून।
वह गुरू कहाँ ? जो पिटा नहीं ना ठगि कै किहिसि कमाई हइ
कलजुग मा मंतर यहै फला जेहिकी लाठी वहु माई हइ ॥

जो यहि बिधि ना गड़बड़ करिहौ नेता ना कबहूँ बनि पइहौ
आपन प्रभाउ ते माँचु लिहे बसि निबुआ चाटति रहि जइहौ।
कुछ तत्त मिले बनिगा मानुष ना कौनउ सिरजन हार हियाँ
जो करिहै ना हेरा फेरी वहु पइहै ना भिनसार हियाँ ॥

अब धरउ किनारे मेहनति का हउ बंद तुरन्त दया छाँड़उ
हउ व्योपारी तउ शोषण कै गड़हा मा सब मजूर गाड़उ।
जो अधिकारी तउ फाइल मा बंधक कइ राखौ राजि पाटि
जो दुकनदार काँकर गवड़उ बिन कसम खाउ अउ देउ घाटि ॥

जो मग मग जुग धारा कै आदर्श छाड़ि तुम बहिहौ ना
विपरीत हवा मा हफिफ डफिफ दुइ पल से फादिल रहिहौ ना।
जो चाहि रहे हौ रैन चैन छल छाँड़ि सुदामा बनौ नही
भूखे नंगे तपसी त्यागी या गइया श्यामा बनौ नही॥

महतारी बोली ओ बिटिया तुम चुनउ अइस वरु मानभावा
जो रिसवति ते भरि कै जेबैं मँझलौखे लौटि घरइ आवा।
हिरनाकुस के जुग मा मंत्री सपने मा बड़ बड़ बोलि रहा
कलजुग की किरिला कौ किनाव मानौ रहि रहि कै खोलि रहा॥

राजा मन्त्रिन की सिच्छा हइ ओ परजा जन लूटउ फूँकउ
जह है जीवन का चढी पारि लुटि जइहै दुनियाँ ना चूकउ।
खुद नउ भौंरा अस बने फिरउ मेहरार, माला अस चाहउ
देखउ ना अपन चरित्तर का औरन की करनी का थाहउ॥

इइ सुरझी भई पहेली जह बहिरागि मइँउ मुल पोल रहउ
जो गाल बजावइ बहु ज्ञानी आपनि पीटनि तुम ढोल रहउ।
हिन्दी की करउ बकालत मुल चाहौ लरिका अँगरेज बनैंइ
अँगरेजी शासन के समान बनि कै अकास बसि यहै तनैंइ॥

सरुआ हुँइ भये फेफडा सब सपना मन्त्री का पूर भवा
हइ भेड भई सिगरी जनता बसि शोषण का दस्तूर भवा।
धीरे धीरे यह अंधकार सैंदल प्रकाश का नापि लिहिसि
सावन भादौ के बादर अस पूरे अकास का झाँपि लिहिसि॥



दोहे

आपन आपन भेस मा सुखी दुष्ट औ सन्त
गोबर कै कीड़ा दुखी पाइ परोस बसन्त ।

खूँटा बाँधो भैंसि अस राजनीति कै हाल
दूसर चौपाया निरखि भड़कि उठै ततकाल ।

आक्टोपस कै छुअनि अस दुष्ट मिताई जान
मानुष मृग कै हेतु जग आखेटक को गान ।

हर कलजुग मा नर बहै सफल सजग दीर्घायु
मुदित भया हट गिअनि जौ बेसर्मी की वायु ।

सबद सबद सब जरि गये आँखी कालिसि मौन
पूछइ उत्तर देइ को समाधान हइ कौन ।

ना भुजंग हइ कै डसउ मुल न तजउ फुफकार
परम हंस का छाँड़ि हइ यहु जग का व्योहार ।

करिया कौइँचा कूबरा आपन रूप अगार
मुल दरपन सबका करै एकसै अंगीकार ।

दोसरेन का दुरिआइ कै निज मुँह रहे बनाइ
औरन का बिगरै नहीं आपन मुँह बलि जाइ ।

जो खिरकी कै काम हइ कबिताई को काम
यहि थल मेढका कूप को लखति व्योम अभिराम ।

बहिरे कै चौपारि यह, हइ बौरा की बानि
कहासुनी को करि सकै मरम प्रेम को जानि ।

जो चाहौ प्रभु कै कृपा तौ सिसु बनौ अदान
महतारी अस राखिहै तुमका कृपा निधान ।

सबद करम समरस बनै मधुर होइ ब्यउहार
कवि का लच्छन हइ यहै उर ते होइ उदार।

धन की इच्छा ते बड़ी जस की इच्छा होइ
स्वाभिमान जग मा बड़ा कवि कै मिच्छा मोइ।

होइ चटोरी जीभ जो और रूप कै ध्यान
टहलइ की आदनि अगर भला करइ भगवान।

एक पुत्र की चाह मा पायेन लरिको सात
निन्न मिली सपनेउ नहीं भई अँधरिया रात।

करौ कामना तुम वहै हइ जतनी औकाति
हाँथी कबँहु न हुइ सकी चूहे जी की जाति।

गरमिन मा कुत्ता दुखी बूढे सर्दी पाइ
बिछुरन की बरसात मा रहि रहि देह पिराइ।

दुइ बहुअन के बीच जो, दुहिता रहइ कुवाँरि
बिना अगिन के जरि मरै नित्त मचावै रारि।

घर की मलिकिन क लगै अगर चाट की चाट
जिनरै भीतर होइ घर, बदि कै बारावाट।



का करिहैं चिरई चुनगा

प्रातहि लै जरी कैन गये गिग
साँझ भइ घर आवत नाहीं।
भूँखेन दौस बितावति हूँइ मुल
स्वंहु डोजल पावत नाही।
राह निहारि निहारि थके दृग
कौनँउ धीर, बँधावत नाहीं।
आस जरै बिसवास जरै
घनश्याम जु काहे बुझावन नाही॥

फाटि गवा धरती का हिया
पुनि फाटि गयी अँगिया सी जवानी।
बैठि गये सब गाल बेहाल मे
आँसुन काज मिलै नही पानी।
बादर ते भुइ रोइ रही
मिलिहै हमका कब चूनर धानी?
हफ्फति जीभ निकारे दुखी
रिरिआति भे पादप मानो गुमानी॥

प्रानन ते अटकी है कहूँ
कोऊ कफ्फन कै बदि घात लगावै।
बोचइ मा उड़ि जाति मरी
जनौ सूम सों बादर ठेंगा देखावै।
शक्कर माटी को तेल औ रासन
भाषण मा जनता नित पावै।
बच्चा मरैं चहैं अच्चा मरैं
मुल नाउनि गीत पुरैते को गावै॥

का करिहै चिरई चुनगा जब
खतन मा कहूँ बीजुन पइहै।
का कहहूँ इन नालन मा अब
भैंसिन के मिलि झुंड नहइहै।
का कबहूँक उयें सविता
अरविन्द उघारि मरन्द उड़इहै।
कौन घरी सजनी अब प्रीतम
घाम भरे सिर भीजति अइहै।।



ईमानदारी कइसे निभइ

मत्र खँइचइ का खाल तैयार
ईमानदारी कइसे निभइ।
ब्योपारी बेइमान कहावै
बिन बेइमानी पार न पावै
बोलँइ साँचु तौ हाकिम हुरहा
पूँजी तौनउ नोचि नसावै
लँड़ दमाद ते जादा खातिर
इस पेइर मुछमुडा सातिर
बनइ न गैतल कस ब्योपार
ईमानदारी कइसे निभइ।

सपलाई अपुसर मुँह बाये
अनखारे हइ जो अनखाये
रहो सहो नेता पलझावैं
थाने दोहरी मार लगावैं
लगी रहइ रासन मा लाइन
करि बिलेक सब माल नघाइनि
कौन घाटा सहइ कोटेदार
ईमानदारी कइसे निभइ।

बीस लाख मक्का न आगा
आध म मंत्री का बावा
पाँच लाख अपसर के हाथे
दस मिलि ठेकेदार के साथे
बनतइ बन पुल पुलिया टूटइ
बाढ़ कै फव्वारा छूटइ
लावँइ कहाँ ते ठेकेदार
ईमानदारी कइसे निभइ।

नेता कहइ कि मंत्री जानइ
मंत्री कहइ कि अपसर जानइ
अपसर कहइ कि बाबू जानइ
बाबू कहइ कि फाइल जानइ
फाइल कहइ कि पइसा जानइ
दस मिलि अपनी अपनी तानइ
निआउ भवा जंगल केरि गुहार
ईमानदारी कइसे निभइ।

मारिनि ब्रन मंत्री कुछ दंगल
बगियन ते बनर भे जंगल
जौन जहाँ बहु करिसि छलाली
बात बात मा भई दलाली
कौनउ मौका जाइ न खाली
नेता जाली अफसर जाली
करँइ सविता अँधेर, भिनसार
ईमानदारी कइसे निभइ।

घटी प्रजातंत्र की बाँधे
जन पूजा की डोली काँधे
हम अजेय हन चहै जो करी
चोरी-डाका और तसकरी
दोहरे मन मा खेलि रहे हन
स्वतंत्रता अब झेलि रहे हन
कब कुत्तन का खिउ दरकार
ईमामदारी कइसे निभइ।

औसर मिला त लूटउ फूकउ
पछितइहौ यहि बदि न चूकउ
बढ़िया करि लासि अस जनता
भिनकइं बहुत ओढ़ि सज्जनता
बँगला चार अलाट करावउ
ना फोक्कन मा नाँउ धरावउ
लड़ि पइहो कइसे चुनाउ तुम
हुइहै बन्द प्रचार
ईमानदारी कइसे निभइ।

●

चील्ह भोज

जयसुख लाला कै लरिका की कइके बिआहु लौटी बरात
मिलि यार दोस्त माँगइ लागे नेउता करिबे की बात बनी।
हमरउ घर कारडु आइ गवा तनि जिउ जुड़ान खुशियाली भइ
कपड़ा लत्ता धोयेन पहिरेन चलिबे को हफर दलाली भइ ॥

फाटकइ जौर लाला ठाढ़े जो आवइ ओहिका बैठारैंइ
छिन भित्तर मा भरि गइं कुर्सी सब मर्द मेहरुआ बोलकारैंइ।
देखतइ सन छोट गिलासन मा कुछ करुआ करुआ आइ गवा
सबके हाथन मा जहरु अइस जाने का कौन थमाइ गवा ॥

जस घूँट पहिल खँइचेन तइसेइ मुँह चरपरान बकठाइ गवा
डेरभुत हुइ चुप्पे धरेन ठौर सोचेन जहु कौन सवाद नवा।
तब आये जयसुख लाला जो बोले अब भोजन शुरु चलइ
सब भई मारि कै दौरि परे तउ दारि हमारी कहाँ गलइ ॥

एकन का नुचिगा पइजामा एकन का कुरता फाटि गव
लरिका महनारी ते छूटा कोउ कहूसउ बाराबाटि भव
दुइ मेजन की धक्का मुक्की कुछ लिहे पलेटउ मुँह ताकैं
कुछ भोजन कै संजोग छाँड़ि भोग्इ संजोग लिहे हाँकैं

हुइ गवा कबड्डी अस पाला जो जीति भागि घुसिगा खाइसि
जो बूढ ठूढ सो रहा ठाढ बिरझावन कोसिन मुँह बाइसि
जो रचउ कीन्हिसि लाज सरम बहुपट कम्पाइट टाढ ठाढ
एकइ मन आबइ एक जाइ सोचेन हइ फँसिगा आजु गाढ़

कौनउ तरकारी को चिमचा मीठे पोलाउ मा बोरि दिहिसि
कोउ रसगुल्ला कै चुअति रसा खम्ना मा दाबि निचोरि दिहिस
मेहरारू लरिका अउ आदमी अपनी घालन मा चरै लाग
ज पाइसि जौनी घास फूस वहु कटकटाइ कै चरै लाग

कौनउ जूठी लइके पलेट चटनी भिन्नाक लै खाइ रहा
कौनउ अध पिये गिलासन मा पानी लइ घेंट सधाइ रहा।
सौ जनेन क्यार रासन पानी ओहिमा दुइसौ मनई पिलिगे
बाह्मन ठाकुर अउ मुसलमान सब भेद भूलि एकजुट मिलिगे।

सब तोर देबालइ दिहिसि भोज घन जाति पाँति कै अंधकारु
कुछ भुखजरु लिहे चले आये वसि चाटि तनिकु जूठा अचारु।
ठाढ़े भेन जुरि कै याक ठौर नथुनन मा घुसि भयकाइंधि गइ
ना गली रही सिरकिहिन बदि नेउता की अइस चिराँइधि भइ ॥

तव लौं आवा लरिकौना जस सब रसा देंह पर नाइ दिहिसि
हम देखेन कटहा तोता अस वहु सारी कहि मुँह बाइ दिहिसि।
घर मा सुन्ना अंग्यारि देखि लौटेन वैरंग रुन्नानि देंह
सब पूछिनि भोजन कइ आयेउ मुँह सूखि गवा हुइ गेन विदेह ॥

सियाराम मिश्र

गायेन जस देखे

हिम कै बिटिया

जौन हुते मँगता कबौं सो
बनि गे महासन्त तुमारे सहारे।
बानी रसीली करौ तुमहें
हरौ भीर कै पाप भये भिनसारे।
तारि रही हौ जुगाधिन ते
नहीं ढोल गँवार न सूद बिचारे।
पाइ कै घाट कबीर भये
न अधीर भये कोऊ आइ किनारे।

हौ हिम कै बिटिया तुमहे
हिमराज तुमै नित बैंया चलावै।
कोऊ करै अभिमान भुला
शिव के सिवा कोऊ मनाइ न पावै।
पाप हरौ त्रय ताप छरौ
करौ मंगल जो तुमका गोहरावै।
संस्कृति कै उद्घोष सी कोस सी
देव नदी सुधाधार सी धावै।

कूरा परा कहूँ लासि परी
कहूँ होइ हजारन कै बटवारे।
पूत तुमारे बहाइ रहे
कहूँ कोठिन कै गँदले परनारे।
पाती न बाँचि सकैं लछिमी
बहिनी उनका जो लिखैं भिनसारे।
ठाढ़े कहूँ पछिताइ भगीरथ
और लजाइ रहे शिव धारे।

साँचु है पूत कपूत भये
मुला हौ तुम इन्दर लोक की गइया।
प्रान अधार बनी कृषि की
कृषि बैठि कै द्वार हूँइ लेति बलइया।
एक बनौ अर, नैक बनौ
महामंतर, नाविक पार करइया।
सीतल बाढ़ि सुधाधर ते
ममतामयी हौ यहि देस की मइया॥



जब आवा दौस देबारी कै

जब आवा दौसु देबारी कै मेला मा उमड़ी भीड़ बड़ी
कोउ थामे लछिमी अउ गनेस कौनउ मद्दुइया लिहिसि घड़ी
बाबू जी याकै घूमि रहे साथे मा लिहे सुघर लरिका
बबुआइनि संघइ उलरि रही हँसि हँसि सुख बाँटि जलम भरिका

लरिका के दोनउ हाथन मा चमकुआ खेलउना अइस रहँइ
जइसे माटी की भाखा मा कहि साँचु जगत का सकुचि दहँइ
यतने मा वहँ लरिकवा का दोसर लरिकौना देखि परा
लरिकाँई केरि अजब दुनियाँ जह जानइ ना ठगुआ नखरा

बोलकारिसि कहाँ लिहे झोरा मेला मा अइसेन घूमि रहा
नंगे पाँयेन उरझे बारन सब धूरि धूसरित सटपटहा।
वहु सुड़किसि नाक निहारिसि तनि मुल रंचउ बक्कुर ना फोरिसि
उगिलिसि समाज कै अदिनु घोर कुछ नई सम्यता का झोरिसि

बलु कइके झोरा खंइचि लिहिसि जो जिउ परान अस हाथे मा
बाबू बबुआइनि छूटि परे जो रहँइ अबइ लगु साथे मा
बोला बाबू का पूत सकुचि ओहि मइले झोरा का निहारि
जइ पउआ मरि खंडी चाउर तुम राखे हौ यहिमा सुधारि।

गायेन जस

जइसे श्रीकृष्ण सुदामा के बगले ते झटकिनि पोटकरिया
तब निसुसि कहिसि जो गिरि जइहै का खइहै मादी महतरिया।
जो कौनउ भूत भविष्य नहीं बसि फटी जाँघिया ढोये हइ
तम ते जादा परभात मनौ दृग मा नाखून गडोये हइ॥

बाबू जी आये लौटि पौटि झिडिकिन केहि ते बतराइ रहा
मगरे बुद्धन संग खेलि खेलि परिवार कुटुम्ब लजाइ रहा।
फिरि लरिकौना चिल्लाइ परा जब पहुचि गवा घर कै जौरे
देखिसि दिन्ना का ठेला पर मन हटकिसि पाँउ तहूँ दौरे॥

ऊ देखउ नेकर का पकरे माटी का तेल भराइ रहा
हइ मस्त गरीबी बाना मा मन मा जानै का गाइ रहा।
मुँह फोरि कहिनि बाबू उदास रदखैलो सघति करै नास
फँसि गयेन हियाँ लइके मकान ना हइ विकास कै रंच आस॥

हक्की बक्की औकाति लिहे मुरि मुरि धूरिसि घर चला गवा
मुँह बबुआइन का अइस खुला नयनू छोड़ाइ जस होइ तवा।
जो कालिह गयेउ संघति महियाँ मनहूस पुकारन पर भइया
तउ जनिबा उजरि सबेरु गवा खूँटा ते गइ तोराइ गइया॥

साबुन केरी मरजादा हइ बहु यतना मैल छोड़ाइ सकइ
कब गंगा जलु भइहै ओहिका जो जलमइ और शराब छकइ।
कौनउ घर परब देवारी हइ कौनउ घर फाका मस्ती हइ
अँधियारु बहुत हइ दुनियाँ मा रोशनी न आजउ सस्ती हइ॥

•

अखण्ड रामाइनि

जब अबकी ते मलमासु लगा घरमा अखण्ड भइ रामाइनि
ढोलक तबला अउ हरमुनियाँ गाजा बाजा सब झमकाइनि।
दीना दिनेश परभू दयाल जो किहिनि तुरन्तइ फलु पाइनि
जग भगत कहइ उनका लागा हाकिम हरहा सब अपनाइनि।

देखा देखी कै दुनियाँ हइ, हइ धीरजु देखा देखी मा
बहु मुरदा हइ बहु हइ लुजगुन जो भाउ गढ़िसि ना शेखी मा।
हन भीतर ते केतनेउ कोइला उप्पर ते सब जन भगत कहँइ
हमरी लछिमी कै आगे झुकि मुँह बन्द करँइ मुल स्वगत कहँइ॥

जेतने अपसर जेतने गाहक रामाइन सुनिबे कहँ आये
इधी काण्डन पर होइँ कांण्ड बोइ बातन के फागुन लाये।
दुइ चारि मजूरन अस मुनीम बेमन छंदन का गाइ रहे
घर के मालिक अउ मेहरारू हकिमन आगे सिरुनाइ रहे॥
देउतन कै फोटू श्रोता भे पढवैया भे कुछ नौजवान
फिरि लरिकिन केर झुंड आवा जइसे ब्रज की गोपी उतान।
लरिकी लरिका संजोग पाइ अठिलाइ रहे मुसकाइ रहे
अउ नई नई तर्जन के मिस कुछ हाउ भाउ समुझाइ रहे॥

सुनि कै रेहकनि बुढ़िया बुढ़वा अधजगे परे अनखाइ रहे
तुलसी बाबा कै छाती पर मूँगे की दारि दराइ रहे।
जेतनी सब किहिनि कमाई मिलि ओतनइ ओतनइ हइ रोगु बढ़ा
मन मा अउरइ कुछ धुकुर पुकुर मुख-राम भाल चन्दन तिकड़ा॥

उप्पर ते जस चन्द्रमा सुघर विज्ञानिक पाइनि राख मुला
मन्दिर ते उर के मन्दिर लौं जहु धरम गँवाइसि साख मुला।
जब भरधर आधी राति भई तउ नींद जगी चेतना हरी
सब उलटा पुल्टा पढ़ै लाग सब रहनि तर्ज रहि गई धरी॥

आवा प्रसंगु जब सागर का बोले तब राम सकोप कहँइ
मुल भरे नींद आँखिन मँहियाँ पढि डारिनि राम सपोक कहँइ।
श्रद्धा का पढि डारिनि अद्धा सीता का फीता एक पढिनि
जो रहँइ सबद ना सपने मा तारा का नारा पढिनि गढ़िनि ॥

चटकई कौनु अब पढइ अइस लरिकन मा कसिकै होड़ लगी
मालिक मलिकिनि सब सोइ रहे मुल ठेलुहन कै गठ जोड लगी।
कइसेउ रामाइनि भई खतम घर का सम्पूरन पाप भगा
मिलिहै न नरक मा इनँइ ठौर जो अपनउ का दइ रहे दगा ॥

परिवार बढति ब्योपार धरम सब कुछ नौकर ते करवावै
आपनि छवि देखे ते डेराँइ ना मरैं जिअइ का कल-पावै।
मुल जानि गये सब सेठि भगत यू रामाइनि का फलु पाइनि
चोरी करिबे की ढाल बनेउ अस राम तुमारे गुन गाइनि ॥

आरती भई परसादु बटा हुइगे कुछ के जूता गायब
दुइसै रुपिया कै चपत लगी साहब छिन मा बनिगे नायब।
जस आखेटक कै मधुर गान जस खातिर सातिर डाकुन की
तस रामायन का आयोजन माइक पर भीर पढाकुन की ॥



आवा परधानी का चुनाव

जब नइया सासन की डोली भकुरी जनता खीझैं परान
तउ आपन मुँह लुकवाबइ का गाँवन पर कसिकै धरिनि सान।
अखबार अकठ्ठइ बमकि उठे हुइहै परधानी का चुनाव
मचि गयी खलभली गाँउ गाँउ बढिगा लतिहाउज, बढा चाउ ॥

सब दौरि परे जस होंइ गिद्ध सरकारी हुण्डी की खातिर
सपने की दुनियाँ दौरि परी यहि मुँइ मुछमुडी की खातिर।
घर घर एकइ बतलानि होइ खेती पाती सब चट्ट भई
बसि जौर रहि गई कूटनीति कपिला नथि कै हरट्ट भई ॥

हुइ गये ठाढ दस लाँग बाँधि आपन आपन लइके निशान
कुरमी बाह्मन धोबी तेली रजपासी ठाकुर मुसलमान
सब आपनि आपनि जातिन कै मिलि आपन आपन व्वाट गिनिनि
जो ललमरुआ ना कहूँ रहैं उइ व्वाटन खातिर ग्वाट गिनिनि

जब निरबिरोध समझौता बदि पुग्खिा कौनउ कुछ बात कहँइ
सब बोलि परँइ उम्मेदवार हमरी बयारि चहुँ ओर बहइ
थुक्का फजिहति मा परि दरि करि चुप साधि घरन का लौटि जाँइ
जो सन्निपात कै रोगी हुइ उल्टे बैदन पर बडबड़ाँइ

देखउ बोटर कै करामाति सबका परधान बनाइ रहा
कोउ लप्प लप्प चिलमैं बारे कोउ ठर्रा मा गुन गाइ रहा।
दीनू उधारि बखिया बोले वोइ दुसमुन हमरे बाबा कै
बनिगे परधान कहूँ जोखे हुँइ जूता बिन पैताबा कै।

कोउ कहइ कि मुरगा फँसा मोट कोउ कहै न सुनिवा रंच झूठ
हम ओट न दयाबे दिल्ला का नहि तौ मचि जइहै खुली लूट।
बोइ रामदीन परदादन कै आपन सनबन्धु बताइ रहे
देहरी की धूरि लिहे डारँइ पानी अस रकम वहाइ रहे।

काहू की लछिमी पर बीतइ कौनउ गुडई देखाइ रहा
कौनउ गप्पन मा पूर गाँउ सरगउ ते बाढ़ि बनाइ रहा।
नौकरी देइ कोउ लरिकन का कोउ बेइमानी के गिनइ व्वाट
जइसे पाबइ उल्टा टेढी वहु सिग्यिान अस बसइ ग्वाट ॥

जब तीनि दौस का बखतु रहा दुइ परधानन मा लट्ठ चला
दुनहूँ दल कै चालान भये बनि गई पुलिस कै भली भला।
मटुकी फूटी सब खुली पोल अउ माटी मा बहिगा पानी
कुसकँधी रोटी जेलि भई यह पाइनि लच्छू परधानी ॥

तब पाँच पाँच सौ रुपिया दइ खिसियाति भये घर का आये
भंगारि परी हुइगा चुनाव पछिताइ रहे सब मुँह बाये।
दुसमनी जुगाधिन की यहि बदि अबकी चुनाव मा पूरि भई
जो उड़ति रहँइ अग्गासे मा उनकी आसा सब धूरि भई ॥

| सियाराम मिश्र

गायेन जस देंख

जब आवा दौसु अलच्छन का हुइ अध्यापक अपसर आये
धूरे ते एक उमेदवार उनका घतिआइ गुपचि लाये।
खटिया परि गइ कालीन बिछी फिरि होइ लागि जमि कै खातिर
चौगिरदा घुघुआ अस बइठे बदमास इलाका कै सातिर ।।

जो पिहिनि नही वोइ छकिनि दूध बोतल पर बोतल खुलै लाग
सब प्रजातन्त्र कै परिपाटी करुई शराब मा घुलै लाग।
जो रहँइ सिपाही होम गाट बेहोश भये भुँइ मा गिरि गे
जइ हाय भगीरथ गंगा कै मुँह खोलि नरदहा मा तिरिगे ।।

भनभारु भवा खग चहचहान सब पहुँचि गये विद्यालय मा
अस गलइ लागि जन तन्त्र देह जस पाँडव गलँइ हिमालय मा।
जिनके जेबन मा ओट रहँइ उइ ग्वैर खवाह भगवान चले
नेता या देउता धरती कै जगु जीतइ आजु किसान चले ।।

जेहिका खाइनि तेहिका गाइनि बेइमानी की चढ़ि बजी पारि
कुछ ओट ग्वोंसिगे छपरा मा कुछ इंधी उंधी दिहिनि डारि।
फिरि भर्र मारि घुसि गई भीर कइ सके न घरुआ होम गाट
गडबड मचि गा चलि गइ लाठी रुकिगा चुनाव उखरे कपाट ।।

चूचुआति तेलु जेहिके माथे गरिआइसि बकमु उठाइ लिहिसि
सब जीति हारि लइ भाजि परा कुछ कहिनि बहुत जहु नीक किहिसि
डारिसि माटी को तेल थोर बकसा मा आगि लगाइ दिहिसि
हिकमति बेइमानी अउ तिगड़म छिन वित्तर माँहि जराइ दिहिसि ।।

हल्ला हुइगा बकसा फुँकिगा सब किटकिटान अपसर प्यादे
कुछ पकरे गे कुछ मारे गे कुछ फाँदि भजे नाला नाँधे।
चालानु भवा यालना भई कुछ रोइ गेइ पछिताइ रहे
झंडा हइ ढोउति प्रजातंत्र सब कोसि रहे फलु पाइ रहे ।।

बोइ मौजन मा जो हुइ प्रधान घिउ चुपरी रोटी खाइ रहे
योजना प्रगति अनुदानन ते जेबन की जोति जराइ रहे।



ाराम मिश्र गायेन जस देखेन |

गाँवन के नेता

कुरता धोती खद्दर क्यार
रंग मटमइलो खेत न हार
भोर होति मुँह चुपरैं तेल
रार्खैं होम गाट ते मेल
यहि को लीचर ओहिकी सार
करतब गाँव के नेता क्यार
रोजु रम्भि कसबा का आवैं
लम्बी चौड़ी लौटि सुनावैं

काँधे पर लटकौआ झोरा
बसि बातन को भूँजइ होरा
पटवारिन के अइ हरकारा
आधे आधे को बटवारा
सब ज्ञानन मा दखल लखाइ
रहे सिपाही इनँइ बढ़ाइ
जइ अँधरे धुंधरेन की आँखी
अति सुकुमार बिकाऊ साखी

चश्मा को इनके रंगु लाल
जइ एकइ मा तीनिउ काल
अति परभाउ जेब मा ओट
खाइ पिअइ को कहूँ न खोट



गँवई गाँवन केर मजूर

तीनि माह नेउतन मा काटे
लुच्ची कै लपसी अस चाटे।
पइसा होइ त कलिया रोटी
नाँहि त होइ देबारी खोंटी।
मिलइँ न जो गुपचै भिनसार
ताक न जानँइ करि व्यवहार।
कौनउ नेक सलाह न मानँइ
सब ठगुअन का आपन जानँइ।

कौनउ नाँहि चाह् बलवान
बसि रोटी की पढ़ँइ पुरान।
झुकी अँधेरिया चारिउ बार
पाइनि कथरिन ते न उबार।
कूकुर और बिलइया गावँइ
थके नींद मा जानि न पावँइ।
कटइ दुपहरी बरगद तीर
जह् चौपारि सुनइ सब पीर।

लरिका माँगइ कुछ रिरिआइ
जइ कनकौआ देइँ कटाइ।
आपनि आदति ते मजबूर
गँवई गाँवन केर मजूर।
कटि गइ उमिर न सोचिनि और
कर मा फरुहा मुँह मा कौर।



कसबा का रक्सा वाला

रोजु सलीमा देखइ जाँइ
भूखेन घर लरिका चिल्लाँइ।
जो कौनउ देखइँ मजबूरी
चारि गुनी माखँइ मजदूरी।
रहिबे का टीसन चौराह्
मौका पाबँइ करँइ गुनाह्।
खाँइ पुलिस बालेन की मारु
नेता बलफँइ अत्याचारु।
जइ अदिमी का परखँइ खूब
देखि उठक्कर दाबँइ दूब।

सँझलौखे सब हीरो मात
इनकी बहुत बड़ी औकात।
पाइ अँधेरिया होइँ जवान
इनकी अलग-थलग पहिचान।
बहुत मुला धन ते मजबूर
रोटी के चक्कर मा चूर।
जब श्रीदेवी गाना गावैं
सिटिया हल्ला डारि बजावैं।

बीड़ी फूँकइ पेट करोइ
जानउ रक्सा वाला सोइ।
जबरदत्त जानँइ रिरिआँइ
मुल कमजोर जानि गुर्राइँ।

●

अब के किसान की दुनियाँ

जरीकैन सइकिल मा बाँधे
डारे एक अँगौछा काँधे।
झोरा मा कटहरु औ आलू
सूखे बार पिआसो तालू।
न्यूजिल और पिलिन्जर ढूँढइं
कामदार हुइ अपसर मूड़ंइ।
बाबू जी कहि जीभ खियानी
प्रगति शील की यहै निशानी।

पुलिस पिआदे अउरइ भाँखैं
दूध दहिउ ना घर मा राखैं।
देखा देखी मा हुइ भिनके
पढ़ंइ पूत कनवेन्ट म इनके।
ट्रैक्टर कैं करजा मा लदिगे
सूतइ देति जिन्दगी बदिगे।
छाँडिनि बरगद केरी छाँही
सहर गाँव के भइ गलबाँहीं।

ताल करिनि मछरी व्योपार
यहु गुनु नवा दिहिसि सरकार।
ठौरइ बठिया फूस लखाइ
छपरन बिजुरी बलब सोहाइ।
दूध दुहंइ शहरन का लावंइ
लरिका भिनकँइ माठा पावंइ।
हीटर रोटी थकंइ बनाइ
शहर घुसे गाँवन मा जाइ।
यह अब कैं किसान की दुनियाँ
फूटी ढोल कसी हरमुनियाँ।

●

कारीगर

रुपिया अस्सी रोज कमाँइ
भोर उठइँ अउ बासी खाँइ।
नित अउरन के महल बनावँइ
आपन छपरा माँहि वितावँइ।
कन्नी बसुली आपनि हाथ
जइ निरमाता रहँइ अनाथ।
पिअँइ धकाधक रोज शराब
जइ सझलौखे केर नवाब।
पइजामा पर पहिरि कमीज
जइ कारीगर जग नाचीज।
इनँइ दिहिसि परमेसुर शापि
थकँइ पेट को गड्हा नापि।

हिन्दी के टीचर

लिहे सफेदी कपड़न कार
मुँह ते झारँइ फूल हजार।
ज्ञान होइ का लिहे गरूर
लुजगुन देंही कहँइ हजूर।
भीतर कोतरे उप्पर ठस
मजबूरी के ब्रह्मचर्य अस।
गप्पन के राखँइ भंडार
तारा तोरइ नित्त हजार।
टुटही रहे साइकिल ढोइ
राखँ गरिमा पेट कसोइ।
जो धोती तउ ढीली काँच
इनकी दुनियाँ झूठ न साँच॥

गाँवन के छैल चिकनियाँ

पटरा का पैजामा धारे
उप्पर लाल अँगौछा डारे।
तेल रहा बारन चुचुआइ
छैल चिकनियाँ मेला जाइ।
पानु खाइ बीड़ी सुलगावैं
लिहे जलेबी घर का आवैं।
ओंगेंड सुरमा आँखिन माँहि
बदि के पूरी आलू खाँहि।
बजनि ट्रान्जिस्टर जो होइ
इनते बड़ा न जग मा कोइ।

लागि इनिक जो कच्ची होइ
तउ जहु दुनियाँ सच्ची होइ।
पाँउ दुबरिया पेटु मोटान
जिनकँइ घर मा शिशु नादान।
इनके डाक्टर झोरा छाप
बनें मरीजन बदि अभिशाप।
मेला ठेला इनकी शान
जइ गौतरिहा नये जवान।

जइ मास्टर अँगरेजी क्यार

जब कौनउ अनपढ़ का पावँइ
तब अँगरेजी बोलि सुनावँइ।
दरजा मा नानी मरि जाइ
इनका कछू न आवइ जाइ।
अँगरेजी कै लइ अखबार
जोर जोर बाँचइ बहु बार।
पूँजी पति के देखइ ख्वाब
गाँठे लरिकन माँहि रुआब।
बहै गिरामर बहु अनुवाद
गूँजि रहा इनका जयनाद।
दाढ़ी घिट्टइँ रोज सबेरे
आठौ याम लरिकवा घेरे।
बाँवे घूमँइ कंठ लँगोट
निन्त क्रीज बदि घोटम घोट।
जइ मास्टर अँगरेजी क्यार
इनके नखरा सहस हजार।



बिआहु गाँव कै लरिकी का

जब ते कानन मा भनक परी बप्पा बिआहु तइ करि आये
अस धक्क भई तब ते जिउमा लइ धुन्धि मनो बादर छाये
दिन राति सोचु जह डेहरी अब मइया बाबा कै छुटि जइहै
काजरु अम्मा की आँखिन का घर का दुलार सब लुटि जइहै।

जब बइठइ कबहुँ अकेले मा रुँधि जाइ गरा अउ भरि आवइ
अस बँधइ तार तब हुचकिन का नैनन मा सावन घिरि आवइ।
सरमन मा घर ते निकरइ ना मन की मन मा सब रहइ धरी
जब दौस धनछुआ का आवा मेहरारुन ते भरि गइ बखरी।

सरपच होइँ परपंच होइँ जेहिके मन मा सो कहइ तौन
उलरैं महतारी को करेजु पाथर अस हमका गढ़ै मौन।
कइसेउ कोठरी ते बाहेर का बिटिया का सबै पकरि लायीं
कोउ कहिसि कि ना सरमाउ बहुत गोफनी अस डेलु जकरि लायी

मन का मसोसि देखइ धरती उप्पर न मूड़ उठाइ सकइ
जो बरइ अगिनि भितरै भीतर खारा जल नाँहि बुझाइ सकइ
बहु समउ फलाँगति आइ गवा तहजई मनो शुरुआति लिहे
पति देउतन कै समुहें पुरानि आदर्सन की औकाति लिहे

आई धूरे पर जो बरात दुइ लरिका गोला दागि दिहिन
मन कै झुरान बाँधी टटिया दगतइ मानँउ दइ आगि दिहिन
चलबीसी उथल पुथल हलचल का ऊहा पोह बखान करी
जल अलि अस मानो चित्तु भवा अधभीजी सिरजनहार धरी

आई बरात आई बरात लरिका मनइँ तमकै लागे
अँगरेजी बाजा सुर काढ़िनि फिलमी गाना गमकै लागे
शक्कर कोउ भरिसि डेलइया मा कोउ हाथे लइ गिलास दौरा
मिलि यार दोस्त सहयोग किहिन गा गाँउ भूलि कोतिया मौरा

चि॰। माँगिनि बरतौनी बदि फिरि होइ लाग तक्का तक्की
दुइ दुइ रुपियन पर लड़ैं लाग जो रहैं इ तनिकु बक्की झक्की
भा शिष्टाचार कलेबा भा बेलबा मड़बा समघोर भवा
अब बिदा करउ अब बिदा करउ चारिउ वारन ते शोर भवा

हुइ गाँवन मा अबहूँ रहि गइ मानवता कै पहिचान थोरि
जइ महानगर के साँपन अस ना फुफकारैं कुलकानि बोरि
आटा डेलबन मा लइ दौरा कोउ गोहूँ कोऊ दुइलहरी
भरिगे बोरा सब जुटा गाँव लइ बिदा केरि पीड़ा गहरी

रोबइ लागी डिडकारि मारि लरिकी ना तन का होस रहा
मानँउ हइ कौनिउ गाज गिरी बाकी आँसुन का कोस रहा
बप्पा पर लिपिटि धरी बिटिया बप्पा हुचकिन मा समुझाइनि
अम्मा अचेत हुइ मुँह देखिनि लरिको जनमें को सुख पाइनि

अस लागि रहा धरती रोवइ, रोवँईं बिरबा नभ रोई रहा
जइ धरी किहिसि हइ कौन गजब धीरज हइ धीरज खोइ रहा।
बिटिया की पहिलि बिदाई मा पाथर कठिनाई का छाँडिसि
नयनन मा उबलि परे झरना दुख भली भाँति यहि खन डाँड़िसि।

लरिकी पकरैं तउ छाँड़ै ना सब भाँति भाँति समुझाई रहे
जल्दिही बिदा हुइके अइहो कहि पीरा और बढ़ाई रहे।
जब समुझायें न बनी बात तउ बलु कइके बैठारि दिहिन
दुइ भाई करी जिउ कइके पालकी खोलि के डारि दिहिनि।

धूरे के बाहिर भे कहार सब लौटे और पटाइ रहे
मानँउ भगारि पर्गी घरमा हुइ शिथिल अंग गुँगुआइ रहे।
कोई काहू ते बोलइ ना पयिन तैं रचँउ डोलइ ना
का खइहैं पीहँइ भीतरिहा यू धका भेदु अस खोलइ ना।

जो लौटि पौटि के खबरि दिहिनि दुइ कौम मध्यक के [illegible]
उइ बिटिया का राउतइ पाइनि ना ओपना पावन कै [illegible]
कम बैस अठारह ते भइया ना लरिकौ का बिआहु [illegible]
ना सौंपि कसाई लोभिन का बिनु आगि जिन्दगी [illegible] ।

सनबन्धु बराबरि मा सोहइ कुल के [illegible]
ना रुपिया के मरघट महिंदी अपनी बिटिया का [illegible]
सुख सपना हइ जो प्रेम नही, [illegible]
ओढे अकास भुइँ का बिछाय [illegible] ।

●

सितुली आई

फूल फूल पर पाउ बढ़ावै
जहाँ तहाँ ते उड़ि उड़ि आवै ।
कारे पिअरे औ उजरी
रंग बिरंगे पंख देखावै ।
लरिकन का बहुतै मन भाई
सितुली आई सितुली आई ॥

कृति हइ कौने कलाकार की
देखतइ रहइ जौन नहि देखइ ।
सुन्दरता की अचरज लहरी
कवि समरथ को है जो लेखइ ।
कोमलता की कोमलताई
सितुली आई सितुली आई ॥

फूल फूल से घूस उगाहै
थिर न कछु जग देखि उमाहै।
लगइ प्रकृति के घर की बिटिया
नहुँ भरि माया सबइ ठगावै।
भरइ दगन मा चंचलताई
तितुली आई तितुली आई ॥

देखतइ उड़इ जुरइ जिअराते
पइयाँ लागइ अस फुलवारी।
पंखन मा छवि अमर लुकाये
हुलसइँ राजा और भिखारी।
सीढिन चढ़ै मनौ शिशुताई
तितुली आई तितुली आई ॥

●

बरखा रानी

अउरे जुग मा हुइहै बसन्त
कलजुग मा बरखा रानी हइ।
अउरे जुग मा हुइहै बसन्त कलजुग मा बरखा रानी हइ
हइ राजि पाटि सब वहै ठौर जब भुँइ की चूनर धानी हइ
तपि रहा जेठ आगी बरसइ तरसइ जल का चिरई चुनगा
सूखइ लागे बिरई बिरवा देही मा निकरि परे सुनगा।

भुँइ फटी बेमाई अस हुइ गइ अदिमी लरिका चिल्लाइ लाग
भा ठाढ़ घामु आँखी फारे घुसि गये बिलन मा कार नाग
दुनियाँ अकास देखइ लागी कुत्तन की हफनी बढ़ै लाग
पाँविन मा झलका परै लाग खपड़ी पर गरमी चढ़ै लाग।

जब लुअँइ साँम उगिलइ लागी तब अद्रा आइ नखत गरजा
धरती का झुकि चूमिसि बादर, बिरही बिधुरन का जिउ लरजा
साउन राखी की किहे यादि दिन गिनै लागि बहिनी दुखिया
जिनके घर सम्पति पिउ राजँइ हइ उनते कौन बड़ो सुखिया।

पानी जीवन मा भेदु नही यहि बिन धरती नभ सब सूना
यहि बिन बिरवा खेती पाती मरि जाँइ मरति जस हइ चूना
दादुर मछरी कछुआ जोंकइ इनका सबका जल देउता हइ
गोरू हरहा जलचर नभचर अठिलाँइ कि जइसे नेउता हइ।

बरखा हइ तउ धन्धा करिया हइ बरखा तउ नद्दी नाला
बरखा के रुठतइ डारि देइ सूखा मुँहिमा बडका ताला
बरखा हइ तउ यहु देस सरगु जस जग्गि होंइँ बरखा हित
हइ सूत कपास और धुनियाँ बरखा सुदेस के चरखा हित।

बादर हुडदंग मचाइ रहे रहि रहि बिजुरी चमकाइ रहे
हँइ लुका छिपी के नये खेल सूरज का मनौ खेलाइ रहे
कइ रहे पहाड़न की हँसि हँसि कहुँ सेत बरन मलिहम पट्टी
पसुरो परवत कहुँ रहे सेकि उर बाँधे दहकति अस भट्टी।

कोउ करै पलेवा खेतन मा कोउ घास धरे भीजति जाबइ
कोउ भँइसी लिहे चराइ रहा कोउ मन मा आबइ सो गाबइ
सहरन मा बइठे दुकनदार अपने जिउ का हुलसाइ रहे
बरखा रानी का बिभव देखि आपुस मा चोंच लड़ाइ रहे।

भुँइ का भगवान किसान मुला बरखा पर टिकी किसानी हइ
बरखा महतारी और बाप बरखा रानी महरानी हइ
भादा घासन की खपडी पर मुकुटन का बूँद लजाइ रहे
आपनि बहिनी लहरन का उठि आँखी चमकाइ बोलाइ रहे।

हुहि सुरभि पालकी पर सवार तब लौ गौने बदि आइ गई
चपला-गुड़िया के माथे पर अनखा अस मनौ लगाइ गई
बगुलन की सुघर अल्पना भइ मेढकन की साँचु जल्पना भइ
इन्दर धनुहाँ का लिहे हाथ यह भुँइ की सफल कल्पना भइ।

× × ×

आल्हा गाबँइ कजरी गाबँइ कुछ चुअति भये छप्पर छानी
सब परे गिरे ऊसर बंजर हुइगे जवान पाइनि पानी
कहुँ लोटा बँधिगे आटा मा कहुँ लकरी डेंगरी गयीं भीजि
कोउ बगिया केरि मड़इया मा टबका जमुनन पर रहा रीझि।

सागर जइसे लहराँइ ताल चितवँइ सबका आँखी काढ़े
बगुला मछरी के चिन्तन मा हुँइ एक पाँउ कबते ठाढे
हुइके स्वतंत्र सब घास फूस मारग सिगरे हइ लिहिसि झाँपि
जइसे गुप चुप लइ लइ सुराग खोफिया चोरन का लेइ छापि।

•

तीसरि साखि गंडुआ होइ

अधिरत्ता मा पी कै आवैं
धड़पड़ करि साँकर खटकावैं।
पुरिखन केरि कमाई खाँइ
दुइ पइसा ना भूलि कमाँइ।
पिअँइ शराब निकारँइ गारी
बिलखँइ बाप और महतारी।
ठकुर सोहाती कहइ सो यार
इनते बड़ा कौन हुशियार।
भये नरक चौदसि अस गेह
मँगिहैं भीख न कुछु सन्देह।

और न कुछ लरिका पइहैं
होटलन केरि पलेटइ धोइहैं।
मगरे बुढ्ढा भिम्मा जौन
इनते बड़ा निकम्मा कौन।



लादे बेसरमी का माँस
नगरु करइ इनका उपहास।
करिनि महाभारत निज गेह
बची अकहूला मा बसि खेह।
लरिकी लरिका कहूँ क जाँइ
जइ अपने मा मस्त लखाँइ।
गलत करँइ अउ मानँइ ठीक
यहै सुघर माया की लीक।

खपरे के दुइ पइसा बोरिनि
झूठे नखत अकास के तोरिनि।
जो इनकै समुहें मसुहाँइ
अगिली कोलिया मा कटि जाँइ।
अपने करमन रहे घिनाइ
इज्जति आपनि रहे छिनाइ।
दुपहर तक सोवँइ जइ तानि
निकरी आँखी लेगड़ी बानि।
आपन करनी आप बखान
आलस अउ घमण्ड की खान।
सब के पाप थकँइ नित ढोइ
देइँ दान सब आँसुन रोइ।
कहत पुरोहित की सब कोइ
तीसरि साखि गड़ुआ होइ।

इनते राम छोडावइ जान
जइ मक्कर करि सोवँइ तान।

●

मीरा बनीं

बहु पीर नरासिबे की सहि कै चमकी दमकी बनि हीरा कनी
उड़िगै मनो नींद चिरैया तना अगुनी निधनी जो न प्रेम धनी
वह और है आँखि जो देखि सकै अँधियार म जोति तकै दुगनी
घर ते जग ते न बनी जब तौ गुन गाइ के श्याम कै मीरा बनी।

पायेन जो परसादु सनेह का काल भये सब संग संघाती
मै विष कै घरिया भोपना रद पीसि रही कुलकानि की थाती
धूरि भई सब राजि औ पाटि जो श्याम के ही रंग मा रंगराती
पी के सबै मदमस्त भये मुल मीरा बिना पिये हुँइ मदमाती।

देह कै भूली सबै सुधि तौ नित राह निहारि अधीरा भई
कान्ह कै आँखिन रूप भरे भई पागल प्रेम गंभीरा भई
भई नाद सुधारस ते बढ़ि कै नही ढोलक नाँहि मँजीरा भई
मन मा मनमोहन शेष रहे बिष भा मधु, सादर मीरा भई।

प्रेम कै भूरि प्रभाउ महा जग जीवन कै सब भेद भुलाने
बूड़ि गये सो लगे ओहि पार जो पार लगे मँझधार पराने
छूटि परे परिवार के बन्धन मानुष मूढ़ कहुँइ पगलाने
मीरा समाइ गयीं घनश्याम मा मीरा म हुँइ घनश्याम समाने।



शहराती विद्यार्थी

भूत भविष्य म्या ना आनँद
खुद का मकुल अकिलमा बानँद ।
पढ़इ लिखइ मा चित नहिं लावै
दिनु बढ़ि आगे मग कहूँ भागै ।
लइ अकिकलि का कुदहा पाय
नकल सहारा इनका मान ।
छाती की सब बटनँइ खोले
टाँगइ अस कीलैलियाँ डोले ।

बीड़ी सिगरेट पान शराब
अइ हुँइ होटलन केर नवाब ।
ऐसन जूता बेंड़ बँधाइ
जइ तुमरे आदर्श बनाइ ।
कमर मध्य कहाँ अनि खोंसइ
छः इंची चाकू मन मोहइ ।
कलजुग मा बहु चतुर सुजान
फरा चरइ अउ खोवइ ज्ञान ।

सेट बारन औ सोहँइ अइसे
मेघनाथ कै पूतन जइसे ।
विद्यालय के चारिउ ओर
हइ सिटियाबाजी का जोर ।
ई नाजुक सी देह म ताव
बाजी दली आइ कँ दाव ।
माता पिता न कौड़ी मोल
ना इतिहास न हइ भूगोल ।

झूठ साच की मूरति अइसे
भुंजे बड़कवा भाँटा जइसे।
स्कूटर ते मूतइ जाँइ
महतारी का घर धरि खाँइ।
जइ मजनू की हँइ सन्तान
इनका भला करइ भगवान।

●

नई रोशनी के दस्तूर

पहिले पहल शहर का जाँइ
बीड़ी फूंकंइ पान चबाँइ।
सड़क छाँडि कोलिया तक देखंइ
मन मा औरउ अचरजु लेखंइ।
जानंइ घर के बड़े पढ़ीस
मुल जइ गुंडा बनंइ खबीस।
आँटा बेचंइ पिक्चर जाँइ
दरजा मा नहिं कबौ देखाँइ।
देखुआ आवंइ निन्त दुआरे
जइ कालेज के राज दुलारे।
दइजा माँगइ साठि हजार
बनिहै डिपटी पूतु हमार।
कहंइ बाप का अपन मजूर
नई रोशनी कै दस्तूर।
प्रगतिसील की जइ तस्वीर
लटी दुर्दहंडी सरा पनीर।

●

मरी चकबन्दी भई

जनसंख्या बढ़ि रही दिनौ दिन सिकुडि गई सब खेती हइ
जाइ रही अइसे किसान ते जस मुट्ठी की रेती हइ
चकबन्दी जुओं की नाल मरी चकबन्दी भई।

कुछ जमीन चकरोट म निकरी थोरी बारी खोट म निकरी
रिसबति केरि न जो बैसाखी थोरी खुन्स कि ओट म निकरी
हँइ मारिनि हाथु दलाल मरी चकबन्दी भई।

दौरति दौरति पाँइ पिरानें पहुँचेन तईं न ठीक ठिकाने
बाजी गर अस भीर लगावँइ मछरी खुदइ किनारे आवँइ
पटवारी भये मालामाल मरी चकबन्दी भई।

ऊँचा खेतु ताल मा पहुँचा ठेलुहन केर जाल मा पहुँचा
पेसकार तारीख बढ़ावै दस नकशारैं और बतावै
कसाइन कै कुत्ता अस हाल मरी चकबन्दी भई।

कुछ गरीब इज्जतिउ गँवाइनि दुखिया खेती तहूँ न पाइनि
पेसकार मिलि हवस बुझाइनि डाली उप्पर तक पहुँचाइनि
अस फैलाइनि जाल मरी चकबन्दी भई।

बहुत बढारी भुँइ पर बइठे चतुर सिआने घूमँइ अँइठे
सी.ओ. ते ए.सी.ओ बत्तर खन्ती मा रिसवति की पइठे
हँइ किसनऊ हलाल मरी चकबन्दी भई।

रिसबति दइ किसान हँइ खाली डाकू दुखी लुटेरे सोचँइ
राखिसि रंच न हइ चकबन्दी थाने निसुसँइ खम्भा नोचँइ
रहा बूडि मरइ का ताल मरी चकबन्दी भई।
मरी चकबन्दी भई।

●

मुशायरा

हंइ होइ लाग कवि सम्मेलन सब नगर भक्षिकन मा जब ते
कुछ दिन मसोसि मन रहे मुला चलि परे मुसैरा हंइ तब ते
यू मानिति ना उर्दू भाखा बसि इन मुल्लन की भाखा हइ
ई आपनि बपदाई जानैं यू कब ते इनका ख्वाखा हइ

आनन्द नरायन मुल्ला हंइ, हंइ जहाँ ठाढ रघुपति सहाय
चकबस्त कि जिनके आगे सब ई मुल्ला लागति ललबाय
इनका निकारि या तउ किरतन या मासूकी कै झगडा हंइ
कुछ उरझे जीवन के मसाल वाकी लटका हंइ झगडा हंइ

हमहूँ देखी का होनि हुंआ यहि बदि सझैं लौखे पहुँचि गयेन
देखेन मुरगा चिंचिआइ रहे लखि लाल परी डेरभुते भयेन
दुइ सायर जिनके साथे मा दुइ लौंडा देखेन गोर गोर
अद्धी अस पहिरे टहलि रहे नग जड़ी अंगूठी पोर-पोर

कोउ कहइ सरग कै गिलमा हंइ सायर संघइ मा डोरिआये
कोउ कहइ नौगुड़ा चेला हंइ ओस्तादन का हंइ पछुआये
हइ सायर बहु जो छाँड़ि लीक कुछ नये ढंग का अपनावै
जो हइ तेली का बैल कविताई के न भूलि बहु ढिग आवै

सागिर्द धरम अउ विद्या मा कविताई न गुरुडम का मानैं
सायरी न जानइ दुनियाँ का बसि आपन अन्तरु का जानैं
सायरी नही हइ गोट एक सायरी न खेल खेलौना हइ
सायरी जहाँ पर ताकि रहा जगदीस्वर बनि कै बौना हइ।

कोउ पहिरि शेरवानी आवा लटकाये लम्बा जार बन्द
कोउ सुरमा काने लगु ओगे तुरक टोपी पहिरे बुलन्द
बातन ते मिसिरी घोटि घोरि बसि उर्दू की जय जय बोलँइ
कोउ घडी साज कोउ जिन्द साज मुल कथा नबाबी की खोलँइ।

कोउ बेंचि कबाबु रहा देखेन काँधे पर बगुचा ढोउति कोउ
कोउ मोटर क्यार मकैनिक हइ कोउ चुग्गिया बेंचइ सायर सोउ
कोउ खड़ा कचहरी मा दिनु भरि दइ ताल पुकार लगाइ रहा
हइ बहउ सायरन मा बइठा जो बेंचि पतग कमाइ रहा।

कत्था चाटै चूना चाटै ना कबहुँ बरोबरि करि पावै
हाथन मा उगिला पान लिहे बइठे मंचन पर मुँह बावै
कौनउ का चाय के कुल्हड़ मा मचइ पर थूकति हम देखेन
कौनउ की पीक चुई उप्पर गफलनि मा चूकति हम देखेन।

कुछ बिरहाकुल हुइ रोइ रहे बसि उनकै यहइ सायरी हइ
कोउ प्रेम पत्र अस बाँचि रहा हाथे मा लिहे डायरी हइ
दुइ चार नजम अउ गजल छाँड़ि कुछ और न जोवन मा गाइनि
नाजुकता का या जुलफन का या तौ आँसुन का अपनाइनि।

कुछ बीचइ मा चिल्लाइ परैँइ जो वाह करइ की बदि बइठे
सायर ते बढ़ि के अरथु काढि सबदन के सागर मा पइठे
कुछ झूमि रहे कुछ उचकि रहे कुछ बढ़ावइ बदि बइठे
कुछ भूसा कै उप्पर बछरा की खाल चढावइ बदि बइठे।

दुनियाँ का सबते बडा बनाइनि संचालक जेहिका सायर
बहु आवा माइक के समुहें जस कौनउ- होइ दगा टायर
आपुस मा छीठाकसी करैंइ कुछ आये बनि कै व्यंगकार
बीबी का टूटी साइकिल कहि भौंहँइ मटकावै धुँआधार।

कुछ ऐचा नाना गाइ रहे बसि तुकबन्दी कै चक्कर मा
पढतइ आधा पण्डाल रहा जिउ हमरउ फँसा उटक्कर मा
चिल्लाइ परे सब फेकरि परे यू सबते नीकी सेर कहिसि
हुइ रहा मुसलमानन पर जो बसि भारत मा अँधेरु कहिसि।

गायेन जस देखेन।

ारसम मिश्र

बहु कहिसि की आपन देसइ मा यू लागति आजु पराये हन
हइ लरिकन अस आदति हमार हन खाये मुल अनखाये हन
कोउ एकइ सेर पढ़इ फिरि फिरि भरि भरि अलाप मुँह बाइ बाइ
कहुं ऊँची करइ अबाज और कहुँ भिनकि सुनावइ सुर दबाइ।

पानी मा भीजि डबलरोटी अस जिउ सब श्रोतन का हुइगा
कुछ टुकडा रहिगे बीडी के कुछ कुल्हड़ औरन कुछ छुइगा
हम पल्लूझार कथा सुनिके हन अइबे बदि पछिताइ रहे
जइ बहुत जुगाधिन ते एकइ गाथा गजलन मा गाइ रहे।

●

दोहे

धरम बीज हइ खेत का राजनीति हइ अन्न
एक भ्रूण हइ कोखि का छकि पय दूजा टन्न।

वर्तमान की चाह हइ राजनीति की चाल
धरम ग्वाट अति दूर की स्वारथ औरु बबाल।

मानुष भुँइ पर आइ कै जब सोचिसि बहुकाल
अटल राजि की बदि चलिसि, सम्प्रदाय की चाल।

कहि के खतरा मा धरम पण्डित कोढ़ैं काम
करौ रारि बलफैं धरम, धरमी नमक हराम।

जब लौ खतरा मा धरम मठाधीश की सान
आगि लगावहिं अन्यथा हरहिं सुमति कै प्रान।

राजनीति या खल-धरम हइं कलजुग कै सस्त्र
मठाधीश नेता दुऔ बिन इनके निरवस्त्र।

साँचे साधु न आइहैं राजनीति के गाँउ
जनि बूझि को डारिहै इन काँटन या पाँउ।

सहज भरोसा नकल का हुलसै बुद्धि ललाम
आपनि राह बनाइबो बड़ो सयानो काम।
सरी लासि अब धरम की ढोवैं मुल्ला सन्त
कहूँ निसाना हइ लगा हइ निगाह कहुँ अन्त।
माया की जकड़नि यहै पकरि न छाँड़ें गेह
रहइ काहिली संग लइ मोह दर्प सन्देह।
धरमी की संगति भली औ बरगद की छाँह
बखरी चौडी राह की, बर विवेक की बाँह।
पुलिस कबी अउ टहलुई बूढी होइ छिनारि
इन चारिउ ते भूलिहू ना करिअउ तकरारि।
राह होइ परदेस की तम बरात या सार
सेवउ नही एकन्त का हर जवान जो नार।
बैस जवानी संग तिय और नसेड़ी बान
होइ पुजारी अस जहाँ हइ आफति की खान।
परइ कचहरी फंग मा अउ सराब की बानि
होइ कर्ज को खाइबो गयी मनौ कुल कानि।
बौडम मधुपायी जहाँ बँधइ मरकहा बैल
नारि कुलच्छनि पाँव रिपु भूलि न पकरौ गैल।
साथ साथ जुग के चलइ बहै मनुज हुशियार
जो जुग के आगे चलइ सो जुग को सरदार।
समय-समय की बात हइ मित्र शत्रु नहीं कोय
जौन पतुरिया की दसा राजनीति की सोय।
चिरजीवी वहु कवि रहा वहैं भवा सरनाम
मारिसि घर का लात कहि चूल्हे मिआँ सलाम।
बिना जगाये न जगें सोवैं लम्बी तान
दास-छात्र बदि नीद असि भला करैं भगवान।
छेड़ैं लरिका नित्त मुल कहर न उनका कोय
लरिकिन का बदि कै कहइ पुरुष वर्ग अस होय।
अदिमी केतनौं हूँ करँइ निन्त विनौने काम
नारि रहइ संकोच मा तबहूँ नित बदनाम।

मिलइ बात बसा कहूँ उजला नातेदार
मूरख होइ दहेज की जौन करै इन्कार

भुँइ पर आसा की बसइ जह मानुष की जाति
जगति रहइ उलझन बुनइ होइ दौभ या राति

पूजा करउ करोर तुम सुख ना पइहौ भूल
जब लौ मन ना रोकिहौ यह पूजा की मूल

ज्ञान गैस की रोशनी बुद्धि नर्तका मान
नृप समाज दस इन्द्रियाँ यहु रहस्य कों जान

उचकि चलइ बोलइ मधुर सोभन गोरी देह
आँखिन बाहेर करिअई भूलि न लावउ गेह

यार मदकची कवि कबौं दूरी ते न डेराँइ
चुल मेटइ की बदि अपनि नदी पैरि के जाइ

जानि लेइँ मिलिहै अगर रोटी साँझ सकार
कामु निकम्मा ना करैं सोवँइ पाँउ पसार।

कुछ मानुष कै भेस मा घूमि रहे हैं बैल
बेमन कुछ करिहै नही मन ते खोदिहैं सैल

भट्ठी दहकै धरम की चुरै नीति की दारि
राजनीति की लौंडिया घरमा धरै उतारि।

सुअरी अस जनता चहै मरि मरि के चिल्लाइ
कामु न नेता आइहै अनखाये अनखाय।

अंगस बंगस पाँउ अरु देखउ श्यामल गात
जौन कहइ चुप हुइ सुनउ सुखी रहउ दिन रात।

पुलिस मोहकमा मा सदा जातइ परिचय देउ
नइँ तउ गारी खाइहौ लइ सहपटही टेउ।

लरिका नित भूखेन मरैं दुलहिन काटइ रोय
चन्दा ते कफ्फन जुरइ असिल सराबी सोय।

सभा या कि दफ्तर कहूँ सोचि समुझि कै जाउ
सिटिर पिटिर मा जो परेउ कर मींजे पछिताउ।

ठकुर सोहाती बदि कहउ काम परे पर बात
नाँहि त घर बइठे रहउ करम कोसि दिन रात।

गुन प्रकटाये ही बनै औगुन राखौ गोय
पीटि ढिंढोरा जो सकइ चतुर गुनी हइ सोय।

बोल बोलक्कड श्याम रग मोटी घीच लखाय
उप्पर ते जो पेटु बड समुझौ कुसल न आय।

अधिकारी ते बदि मिलउ पहिले जानउ टेउ
सक्षेपण रसमय अगर तुरत सफलता लेउ।

दुइ जातिन के जोग ते अगर जो जातक होइ
या तउ कुल दीपक बनै या कुल देइ डुबोइ।

जानि सकै को नर समय, कब बनि जइहै बात
निज विवेक का राखि कै करौ दोष पर घात।

सीखइ सुधरइ बदि नही कबौं होति हइ देर
भोर भये निशि बीतिहै पुनि छँटिहै अन्धेर।

अगर बड़प्पनु और का तुमका अंगीकार
आँखिन ते परदा करौ यहु घूँघट का सार।

घूँघट हीन असभ्य नँहि सभ्य घूँघट माँहि
व्यउहारन ते मेहरुआ सभ्य असभ्य लखाँहि।

राजा मंत्री बैद अरु मित्र अगर मिलि जाइ
पीर बताये ही बनै बाढै बिपति छिपाइ।

जो न कबहुँ चोरी करै खुद ते अपन विचार
वहै सराहा जाति हइ जगदीश्वर कै द्वार।

तेल खून की रारि मा मानवता अकुलानि
फिरि फिरि पकरिसि नर वहै महायुद्ध कै बानि।

आपन मत जग पर लदै यहै युद्ध कै हेतु
भला करिनि कब भूमि का कहउ राहु औ केतु।

जडमति सुत ते हइ भला सदा निपूता बाप
दुख बउने सब जगत कै बड़ा गेह परिताप।

पाथर ना बौड़इँ बढ़इँ सींचउ लाख करो
धुआं होति कब हइ जलद नाहक करिहौ रोर।

मिश्र गायेन जस देखेन

जड़मति ते लुजा भला कथइ भागि कै दोष
परजीवी हइ एक तउ, अन्य भिजारै कोष।

गाउ चाउ मा दिनु कटइ सनकइ जइसे बैल
लुसि कन्या बातइ सुनइ नसै समूचा गैल।

मुरची पर को बैठिबो अउ मँगिबे की बान
एक दिन रारि कराइहै सुमुखि गवँइहै मान।

एकतउ दोसरि और पुनि होइ चमकनी नारि
धीच धरे घूमइ मनौ नर नगी तरवारि।

चुगली चाइ नित करै बाला राखइ बात
चोरि भीर पहिले लडइ मुसकी मा उतपात।

●

कुण्डलियाँ

खोंटा सिक्का सहज गति चलइ चलन मा रोज
राह चलति अनि भलेन को घिसि घिसि मेटइ खोज।
घिसि घिसि मेटइ खोज न नीके अब रहि जइहैं
आपन चारिउ वार निरखि जब खोटे पइहैं।
होइ झूठ या साँच अकड़ ना चलइ बहुत दिन
ठौर ठौर जब काँच पाँउ की भलगति पल छिन।।

पलई सींचे ना बढ़इ पादप कबहुँ अशोक
पानो मा छाया निरखि उड़इ रात दिन कोक।
उड़इ रात दिन कोक न सांची कोकी पइहै
जब लौं भ्रम करि दूरि अपनवौ ना बिसरइहै।
अहै ज्ञान की बात न जब लौ स्वारथ जइहै
मारग अन्टई सन्टे दुचित मानुष अपतइहै।।

बगुला ते नत्तर बने चलँइ हस की चाल
डोली तर छिनगा भये बिपति भई ससुराल।
बिपति भई ससुराल वहू सकट मा परि गइ
रच न साबुत बची दारि बटुली मा जरि गइ।
धीर धरौ सब लोग लौटि अब बहु दिनु अइहैं
भलमंसी कै बीज न कहुँ खोजे मिलि पइहैं॥

रोला

स्वारथ पकरिसि जोर क्रोध की भड़कइ ज्वाला
घेरिसि हिंसा गेह अघी गज हइ मतवाला।
मिला न खोजे पन्थु बढ़ा औरइ अँधियारा
हारि गवा सब ठौर जौन नर मनते हारा॥

•

कुण्डलियाँ

पेन्सलीन जानइ नही ऊँच नीच व्यवहार
सबका एकसै गुन करै बाह्मन डोम चमार।
बाह्मन डोम चमार एक सबके हित गाड़ी
चली अगर तौ चली चाँहि टीसन पर ठाढ़ी।
चहउ सुमति मन माँहि लीक पकरउ विज्ञानी
करउ शक्ति की खोज शक्ति हइ अक्छर दानी॥

कविताई उर जोरि कै भरइ काठ मा प्रान
तनातनी स्वाहा करइ, दूरि करइ अभिमान।
दूरि करइ अभिमान न कविता भित्ति बनावै
छन्द और परबन्ध चहै जेहिमा चलि आवै।
ढाँचा या तुकताल, इइ यह कौनउ वाद नहिं
उर कै सूधो बानि, अखबारी अनुवाद नहिं॥

रोला

शक्ति न दीजउ भूलि बाँदर का विज्ञान की
नेता यहिका पाइ राह देइ समशान की।
पीठी पर का घाउ मुला कप्पार म सेकँइ
राजनीति की आगि फरी बगिया मा फेकँइ ॥

गिरि परिहौ भरिाइ मोट गरुई उठाइ कै
हुइहौ पागल बादि शान झूठी बनाइ कै
कहौ वहै हो जौन न आगे चलि पछितइहौ
झूठे बनिहौ हंस उघरि कै बहुत लजइहौ

वहै बना भगवान जो न खटा मँझधार ते
सुखी किनारा पाइ दूरि भवा हर धार ते।
ढोइसि बल्ली बाँस बिछाइसि दरा उमिरि भरि
बना आजु लौ दास नरक मा वहै रहा सरि ॥



कुण्डलियाँ

मछरी चिन्तन कइ रहे सब विभाग यहि काल
नेता हाकिम छोट बड़ सबइ भये घरियाल।
सबइ भये घरियाल टोट बगुला अस मारैं
नोचंइ भूत भविष्य देस गड़हा मा डारैं।
कारन यहै देखाव भले का बदलिसि खोटा
फरे बड़कवा बिरिछ भवा मरकिचिया छोटा।

नारा बाजो चढ़ि बजी दाबि साँचु कै बानि
काँच केर टुकड़ा भये बफलि रतन धन खानि
बफलि रतन धन खान न पाइनि रंचउ बोइ जन
हड्डी दिहिनि सुखाइ गँवाइनि जो तन मन धन
कागजु लिहिनि निकारि भये वृग उबली घुइयाँ
नेता गरजे बहुत न मुल बरसाइनि फुइयाँ

चतुराई भलि जगत मा जो मतलब भरि होइ
राजि पाटि लरिका गये चतुराई मा खोइ।
चतुराई मा खोइ भये धृतराष्ट्र घिनउने
हाथ रहा पछिताउ अति चतुर मानुष बउने।
सुतरमुर्ग मरि जाइ गाड़ि खपड़ी मट्टी मा
कौआ चतुर कहाइ टोंट मारइ टट्टी मा।

गिरइ केरि सीमा नही उठिबे को नँहि छोर
शक्ति अपरबल मनुज की सीमित खग मृग ढोर।
सीमित खग मृग ढोर नीद अउ भूख बुद्धि बल
परवस धारे प्रान न राखँइ रंच कपट छल।
जह मानुष की जाति विधाता थाह न पावैं
सहै कोख की पीर और खुद का उपजावै।



कवि सम्मेलन

रुपिया पइसा ते अरस भये कुछ व्योपारी हिलि मिलि बइठे
ठेलुहन का चही मनोरंजन जो गेसि कवितई मा पइठे
तुकबन्द भये दुइ संजोजक कवि सम्मेलन मिस लगी घात
बनि गई कमेटी और भवा चन्दा अथाइ फिरि अकसमात।

संजोजक रहँइ सियान जौन बोइ चिट्ठी पत्री डारि दिहिनि
कवि माँगि लिहिनि बीसन हजार बटिया चन्दा की पारि दिहिनि
तनि मोल भाउ करि आठ जने सम्मेलन मा बोलवाये गे
अउ एक मदरसा मा सब कवि फिर भली भाँति ठहराये गे।

दुइ जनें मुला लरिकी जवान देखेन साथे मा डोरिआये
पूछेन तउ बोले कवयित्री हम किव्येन खुशामदि हँइ लाये
कोइ अलग थलग कमरा चाही जेहिमा जह लरिकी लेटि सकै
सब लाज सरम अउ धमकच्चर अठलक्कड़ बिना समेटि सकै।

तब अलग अलग फरमाइसि भइ कोउ दूधु गुनगुना कोउ पानी
कोउ काफी कौनउ चाय पिहिसि कोउ बलफिसि अपनि हैरानी
कोउ छानि भाँग झूमइ बइठा खइनी खाये रस चूसि रहा
कोउ बियर पिअइ कोउ रम भिसकी कोउ गरम समोसा ठूँसि रहा

तन माटी का जिउ मस्ती का पछितांइ सरग तुलसी कबीर
कुछ का मन अटका बोतलमा कुछ हुँइ अफीम की बदि अधीर
बेतुकी छेड़ जेहिते तेहिते हुइ धुत्त नसा मा करइ लाग
भीतरैं भीतर जब सुरा चढ़ी तउ काम अगिनि अस बरइ लाग

सब की गइ बुद्धि हेराइ मंच पर गये झूमतैं झामति फिर
कविता के बदले चोबोला ना और रही औचापति फिर
कुछ एकइ कविता लौटि पौटि कुछ नवा बदलि के भाँइ दिहिनि
कुछ आँखिन ते कुछ हाथन ते कुछ कूदि फाँदि समुझाइ दिहिनि

हुइ गये तीस लगु बरस न बदली उनकी एकइ कविता हइ
कुछ जोड़ तोड़ कइके निन्नइ हिन्दी मंचन कै सविता हइ
परिवर्तन का जग पुतरा हइ इनकी कविता हइ ज्यों की त्यों
जूता चप्पल लगु जाँइ बदलि मुल जइ अग्गासे की अस बौ।

भोंपू कुल्हड़ हुल्लड़ हुक्का सनकी बौड़म कवि साँड़ भये
जब कविता ते न हँसाइ सके तउ बने बिदूषक भाँड़ भये
कोउ महापुरुष का दइ गारी कसिकै हुल्लड़ मचिआइ रहे
कोउ करुण कहानी कै प्रसंग चिघांड़ि दहाड़ि सुनाइ रहे।

रेशम मा बोरा की चकती कवितई भाँग की पुड़िया हइ
कुछ कवि हुँइ जिनका छुटपन ते बसि कविता की नँहजुड़िया हइ
कविता कइके रहिहौ निरोग हइ बैद दिहिसि कौनउ सलाह
कवितई बिना जइहौ घिनाइ गैलल बनिहउ हुइहौ तबाह।

कुछ सबद जोरि तिगड़म के बल केवल जइ नित मंचन पर गाइ रहे
दिन दूने राति चौगुने जइ मुल असिली कवि मुरझाइ रहे
कोउ कहइ कि प्रेम प्रसंग कहौ कोउ कहइ कि चुप्पे बइठ रहौ
तुम धन्य धन्य [illegible] [illegible] जनता मा पइठ रखो।

आपनि चठिया मा डोलि रहे सब आपुस मा जय बोलि रहे
उल्लू घुघुआ इक दूजे की तारीफन मा रसु घोलि रहे
कुछ जेसी और रोटरी कै बनिये व्योपारी मिलि आये
संघइ मा आपनि मेहरारू लरिका लरिकी सब डोरिआये ।

कोउ बासी अखबारी भाषण तुकबन्दी किहे सुनाइ रहा
कोउ सम्प्रदाय के कीचड़ मा कविता का खैंचि बहाइ रहा
कोउ सूधे सूधे ललिहाउज करि रहा देस के नेता का
कोउ खद्दर का घिनबाइ रहा कोउ ओरि दिहिसि अभिनेता का ।

काहू कै कविता और नही हिन्दू मुस्लिम की खाँई हइ
टी० बी० बी० बी० लौं काहू की कविताई चलिकै आई हइ
कोउ ओढ़ि लबादा हिन्दी का आपनि बिल्डिगं बनाइ रहे
नरकउ मा मिलिहै ठौर नहीं बजगी जो देस कराइ रहे ।

कोउ भाउ बिना भरि भरि अलाप सुरताल बनाइ रिझाइ रहा
कोउ अँइचा ताना जोरि जारि हइ गरा दबाये गाइ रहा
जइ भाखा के परचारक हुँइ लरिका कनवेन्टी ज्ञान लिहे
ई चमडी ते करिया हुँइ मुल भीतर अँगरेजी जान लिहे ।

जइ हुँइ कविता के व्योपारी नित बेचि रहे ईमान धरम
मइले अस भये चरित्तर हुँइ हिन्दी कै फूटति जाति करम
कवि रंडिन ते बत्तर हुइगे जस चहौ राति भर नचवावउ
इनकी पइसा ते यारी हइ चँहि सुनौ या कि मुँह मटकावउ ।

रंडी की कीमति पाँचइ सौ बसि राति भरे की दुरगति के
जइ चारि हजार उगाहि रहे मंचीच जोकरी कीरति के
हुँइ मंच ताल कै जइ नीरज जेहि भाखा मा पाइनि गाइनि
लटके कब ते बनि कै त्रिशंकु कौनउ भाखा ना अपनाइनि ।

बिन नोये लगनी गइया अस जइ कविता बडी दुधारू हइ
हुइ रही करामाती मलिहम या नकली ढोला मारू हइ
दुइ चारि पाठ के बादि मंच की कविता होति पुरानी हइ
जइ सयोजक की मिली भगति जइ जनता की नादानी हइ ।

प्राराम मिश्र

गायेन जस देखेन ।

हइ होति सहालक इनहूँ की खाली तौ कौनउ रेट नहीं
मानुष हइ कविता का मन्टर जेहिते कौनउ विधि भेट नहीं
टायम सब सफरै मा बीतइ साधना होइ सब गाड़ी मा
ना कविता कबहुँ सुनाइ परै इनकी धड़कनि मा नाड़ी मा।

जब सम्मेलन हुइ गवा खतम रुपियन की धमा चौकड़ी भइ
कोउ रूठि चला कोउ लिहिसि काढ़ि मूड़े ते आँखी तमड़ी भइ
निसुसे असिली कवि कोने मा सोषण सहि सहि गहि रहे मौन
अब तौ दादुर बोलिहैं मंतर तुलसी बाबा की सुनै कौन।

हँइ माल-हिरन कै आखेटक कुछ घिसे पिटे कवि बेरि बेरि
कब सुनिहौ कवि की नाम मुला माता कानन का तुम उटेरि।

●

जइ ग्वाला सब इनते माल

रंच न दूध के डब्बा भटके
हिंडल के खँदनन मा अटके।
पाछे दुअउ ओर दुइ बाँधे
सइकिल गरुई खैंचइ राधे।
भोर होत सन दूध बटोरैं
किलो निन्ते चालिस लगु जोरैं।
दुपहरिया मा शहर क आवैं
एकल पसीना एक बनावैं।

यहै जिंदगी का हइ कोउ
तारकोल की पिघलइ रोड।
दूधइ बेंचति कटि गइ वैस
दुखिया कबहुँ न जानिसि ऐस।

चौखाना का तहमद बाँधे
पेट्ट खलाये लगंड बिआधे।
हलवाइन ते यारी होइ
लगनी भैंस दुधारी होइ।
फटइ दूध ठाढी तकरार
गद्दर मुसकी व्यंग हजार।

गाँउ भरे मा करि नेउताइ
बोई झारैं लौंग बनाइ।
दन्द फन्द मा जइ हुशियार
हरि अक्किलि के दावेदार।
बीडी चिलम जहाँ मिलि जाइ
जिउ हुलसइ मन मोदक पाइ।
बड़ी दूध ते इनकी बात
जइ ग्वाला सब इनते मात।

●

ओ ओटर भइया

ओ ओटर भइया हमने न रिसबति खाई।
स्वारथ मा अफसर ना माने
हमरे अड्डा बनिगे थाने
करैंन बहुत हम नाहीं नाहीं
बेइमानी कीन्हिसि गलबाँही
खिरकी डगर हमारे पाछे घरमा डाली आई।
तिकड़म की चौमासी गंगा
चारिउ बार मिला कर नंगा
बोले गल्त अगर ना करिहौ
तउ अगिले चुनाव मा हरिहौ
डूबि जाइ की खातिर कइसे उल्टा नाउ चलाई।

जइसेइ जीप ते बाहेर आयेन
चापलूस कुछ ठाढ़े पायेन
बेग लिहिनि हाथे मा अपने
पूर भये बसि उनके सपने
दलालन केरी खूब भई ठकुराई।
जौने दुखिया दगा बिछाइनि
दौरि धूपि के राजि देवाइनि
दुइ धक्कन मा पीछे रहिगे
मेहनति नीति धरम सब बहिगे
पाँच लाख जब खर्च करी तब हम एम.पी. हुइ पाई।
जब मंत्रिन ते कामु करायेन
बिना चौथि के पार न पायेन
लरिकी का बिआहु कइ डारेन
साठि हजार गिफ्ट मा मारेन
काहू ते माँगिन ना कबहूँ कहौ त कसमैं खाई।
औ ओटर भइया।

●

डाकुन की बनि आई

कौनउ पिछड़ा बरगु लिहे हइ
सरग लिहे अपबरगु लिहे हइ
लिहे संबद मा समता कौनउ
अउ जनता बदि ममता कौनउ
झूठ मूठ पंजाब कि कौनउ हाथ लिहे अगुआई।
कौनउ हइ माफिया सरगना
राजि बनी मूरख का सपना
लिहे बाबरी महजिद कौनउ
जह जिद कौनउ बह जिद कौनउ
केहिका व्वाट देइ अब जनता सब की मति चकराई।

जातिवाद के समीकरन मा
अउ स्वारथ के वशीकरन मा
कौनउ लिहे कमंडल घूमइ
कौनउ लइके मंडल घूमइ
संगरेहइ केहिका अब जनता डाकुन की बनि आई।

कोउ इमाम का नित्त पटावै
अल्प संख्यकन का भरमावै
कौनउ राम रहीम क ज्वारइ
कोउ रहीम ते नाता त्वारइ
चारिउ वार देखान यहै विध हमका ठाढ़ कसाई।

देखि रहे सब आपनि कुरसी
जनता केरि देह हइ झुरसी
हँसइ बिदेशी घाउ दइ नवा
रोग और कुछ और हइ दवा
हाँउ फेकाँउ यहै रातौ दिन का कहि ग्वाट बनाई।
डाकुन की बनि आई।

●

देहाती बाबा

धूरे पर भिठिया के तीर
बहइ महकुई जहाँ समीर।
बाबा एक गाँउ मा आइ
लइनि फूस की कुटी बनाइ।
सैंठा दिहिसि और कोउ बाँस
बाबा की पूरन भइ आस।

भारत के तिरथन का हाल
साँझ सवेरे कर्यंइ सुकाल।
आँटा पावँइ ठिक्कर सेंकंइ
बिना बात की बातइ फेंकँइ।

देर राति लगु चठिया जोरँइ
चिलम मदक कै रस मा बोरंइ।
छोलि अगौरा जो सहँताइ
पी कै घरइ तमाखू जाइ।
लटइ धुआँनी बिनठे वार
हइ चिमटा इनका हथियार।
गुँगुआनी आँखी दुइ गोल
खेंचि निकारँइ मुँह ते बोल।
चमत्कार कहुँ देइँ देखाइ
बनँइ ठढेसुर औसर पाइ।
गाँउ भरे का नित उठि जान
कुछ नउमुडा बघारँइ सान।

जाड़ेन भरि धूनी का तापँइ
भसम लगावैं बादरु नापँइ।
बरइ चिलम जिनकी ना लम्प
हँसी उड़इ तिनकी बनि गप्प।
कौनउ रसु इनका दइ जाइ
मई और धोउना हइ चाइ।
इनके बदि अगरासन काढ़ँइ
उनके लरिका जुग-जुग बाढ़ँइ।
फूँक डरावँइ होंइ बेराम
बावा रिक्ता मा सरनाम।
उल्टे सूधे भजन सुनाइ
मेहरारुन का लेइँ रिझाइ।
कहँइ कबीर सुनउ भइ साधौ
सब बाबा का मिलि आराधौ।



दोहे

दकियानूसी मा परो सम्प्रदाय की जौन
बहुत काल लगिहै नही नसिहै कुनवा तौन।

सम्प्रदाय की बानि हइ नित भेड़िया धसान
अनुभव भिन्न, न हइ कबौ, आतम पंथ समान।

काम परे पर सोइबो अगर कुलच्छनु होइ
लछिमी जी गुस्सा रहँइ सदा कटँइ दिन रोइ।

नित्त फकीरन बदि चही मधुर बानि अउ सील
कपड़ा पूरे जगत कै बसि आतम की कील।

बादर मा बूड़इ अगर नखत लगति दिन सूर्य
बग्गा को बदि कै बजै तेहि पखबारा तूर्य।

हइ चरित्र बल हीन जो रहा कुलच्छनु ढोइ
हीन जगत व्योहार जो सदा अनादर होइ।

गरीबी न पापर बेलइ

सूखे सबै दिन ओंठ रहे
सिकुड़ा मनौ खाल बहोरि चुकी हइ।
लेस औ पोत दवाई बिना
रस प्रान को वात निचोरि चुकी हइ।
पाछे तपेदिक अइमी परी
सब घातन घोंच मरोरि चुकी हइ।
जीवन तार ते तोरि हमैं
जह रोटी सबै घट फोरि चुकी हइ।

देखति का हौ निहारि हमैं
दुख-देवता को सदा वन्दना गायेन
खालिस लोन निरा मिरचा
सदा पानी कै घूटंन रोटी नँघायेन
हुइहैं कहूँ बने राजा रथी
हम तउ लरिका मजदूर बनायेन
कौन भवा जनै पापु महा
कबौं आँसुन ते अवकास न पायेन

दोसु बड़ा इन हाथन मा
छुइ जाँइ जहाँ बहु पाछे ढकेलइ।
लौकिउ जो कहूँ बोयेन तउ
गिरि गा छपरा जिउ को भई जेलइ।
साध यहै रही जीवन मा
कबौ खाइ अघाइ कै छोकरा खेलइ।
और सबै दुख आवैं भुला
अब आइ गरीबी न पापर बेलइ।

●

नींद कहूँ कँकरीली जमीन पे

कान परा जहु एक दिना
मजदूरन के दिन लौटि के अइहैं।
लेनिन माओ के दूत अबै
जुग ने बिगरी जो हमारि बनइहैं।
मालिक हुइ मजदूर सबै
इन सेठिन का परबन्धु सिखइहैं।
लंघन का लछिमी मिलिहैं अब
वैभव के उनैं साँप न खइहै।

एकन केर उजागर हुइ सब
एम मरैं भितरैं न जनावैं।
एक के आँसू बहैं सब देखत
एक बिथा मन मा उफनावैं।
चिन्ता है एक की कैसे बनी चिता
दूसरे की चिता चिन्ता सजावै।
पावैं न एक कबौ भलो भोजन
पावैं जो एक पचाइ न पावै।

नींद कहूँ भजै फूल की सेज पे
नींद कहूँ कँकरीली जमीन पे।
हाथ कहूँ निशिवासर फोन पे
हाथ कहूँ रहै आरा मशीन पे।
एक सड़ भये सेब से भीतर
बाहेर एक हैं कौड़ी के तीन पे।
हँइ दुख देव दुऔ पे लगे
जेतनो धनी पे ओतनो धनहीन पे।

यहि ते कबहुँ न लड़िअउ भूलि

काजरु आँगइ बार सँभारइ
नखत तोरि कै मुँह मा डारइ।
सहइ अजाने की मजबूरी
आदति नंगी खरी मजूरी।
जेहि पर तनिकउ जह दिक्काइ
भजति तुरन्तइ पुलिस क जाइ।
मुसकी मारइ अउ चिल्लाइ
भलमंसी देखे बिल्लाइ।
गढ़इ बात रोजुइ दुइ ढूँढ़ि
रही जवानी दिन मा मूड़ि।

बड़बोली ना जग ते छोट
चिकनी बातइ लूट खसोट
कौनउ यहिका मिलइ न अन्त
थर थर काँपइ देखे सन्त
सुन्दरता की मूरति जानइ
खुद का सती कलजुगी मानइ
का मजाल कौनउ कहि जाइ
लतमरुआ हुइ गारी खाइ।

पुलिस म तेहिका जाइ डँड़ावइ
आपुस मा गुंडा लड़वावइ।
रंच न यहिकी जग मा प्रीति
फेना अस हइ यहिकी प्रीति।
धन का टबका अईस निच्चारइ
देइ न पैरइ बिलकुल ब्यारइ।
सब ते बाला यहि की बात
यहि ते हइ परमेसुर मात।

जो यहिकी तन तनि समहाइ
हुइ चहला की ईंटइ जाइ।
जौन लड़ै पाछे पछिताइ
जब लौ जिअइ जिअति मर जाइ।
लुकुरी फूस के जौरे केरि
बूढ़े विधुरन केरि महेरि।
गुन्डन मा गुण्डा सरदार
आह भरँइ मुछ मुण्डा यार।
पास परोसी सबै डेराँइ
करँइ डंडवत अउ हटि जाँइ।

अनखतरी घाघन की घाघ
ओंठ बनाबइ पाये दाघ।
अस्त्र दलालन का मजबूत
यहि का बलु तुम गिनउ अकूत।
भोर बिलोकइ तौन घिनाइ
और छुये दुइ बेर न खाइ।
यहि ते कबहुँ न लड़िअउ भूलि
नइँ तौ तुमका देहइ हूलि।

भुँइ माता

चन्दा मामा की करनी अब लगु तुम हमैं बतायेउ
अब भुँइ को हाल बताबउ जग कालिह् हमैं समुझायेउ
अगासे माँ न उड़ति हुइ कस जीव जन्तु पर ठाढ़े
कइसे अवनी हइ बाँधे सब बँधे नेह मा गाढ़े

नसते परलय के जलमी तब समुझाइसि महतारी
हइ बारिधि बाप की बिटिया अउ अहै सम्भु की सारी
बिसनू भगवान की लरिकी हइ सूत मूल ते पहिले
सुख देइ सकल प्रानिन का खुद झेलि रही दुख अहिले

नित रहिं रहि महक उडावै कइ सूरज की पइकरमा
महतारी की महतारी जह गाइ प्रभू के घरमा
बछरा गिरिराज हिमालय जो बचै दूधु सब बाँटै
गाखी बँधबावइ को बाँधि चन्दरमा चक्कर काटै।

चहि जेतनी चलँइ कुल्हाड़ी चहि जेतना चीरँइ फारँइ
चहि खोदँइ चहलै पाटै चहि जो धमकच्चरु डारँइ
मूरित मुल एक छमा की जह नितइ लगनी गइया
जह देइ सँदेसा सबका मानइ जह जग का भइया।

अपने तन सब का खैंचइ जह जलम लेति बैठरइ
लखि भाँति भाँति के लरिका ना जह कबहूँ मन मारइ
पतझर मा बनि के बुढ़िया जग का निरबेदु पढ़ावइ
बनि मधुरितुमा महकुइया अभिनव सिगारु सजावइ।

सब भाँति भाँति के सपने जस जौन वहै बिधि देखइ
नित पाठ नेह का दइ के सुख जिअइ यहै बरु लेखइ
सीता माता का धारे दुख जनम जनम के टारँइ
थप जग्य होई तउ पहिलत धरती के पाँउ पखारँइ

पाथर मा प्रान लुकाये गौतम तिय रहइ बिचारी
रज बनी राम की मँझुआ पाथर ते कीन्हिसि नारी
भुँइ जौन फूल उपजावइ पहिरंइ नर उनकी माला
बलि पन्थिन का पहिरावै सोषण का काढि देबाला।

जब मानुष भौरी डारंइ भुँइ आशिर्वाद लुटावइ
लरिका लरिकिन बदि अपनी छाती दिन राति कुटावइ
हइ अन्न धन्न की जननी मानुष के करम थली है
जह हइ असिली महतारी अउ ममता की पुतली है।

जब पाँउ छुअइ चन्दरमा रोजुइ दरबाजे आवइ
आँखिन का काजर बहिनी अनखा मिस भाल लगावइ
करउँट लेतइ खन छिन मा दुख बाँटइ हाला डोला
तब खण्डहर केर सुरन मा गावंइ परेत चौबोला

निज पूतन की उन्नति ते कबहूँ ना हिम्मति हरिहैं
लुंजा लँगड़ा अँधरन का जिउ ते सनेहु नित करिहैं।



जइ कृषी समर के जोधा

बिरहिन के जिउ अस ललिया छाती मा चिटका डारंइ
जब सविता आगी उगिलंइ घामे ते खपड़ी फारंइ
श्रम देखि तुमारो बिरवा हटकटे रंच ना डोलंइ
देंही ते चुअइ पसीना भुँइ के देउता रस घोरंइ।

तक तक बाँ बाँ बसि चीरइ दुपहरिया का सन्नाटा
ठउरइ पर ठाढ़ि उखारी मारइ दुख का दुइ चाँटा
मूड़े मा बाँधि अंगोछा हाथे मा लिहे पनेठी
जग का जो अन्नु खवावइ सब लखंइ दीठि ते हेंठी।

बिन भूख पिआस जुटा हुइ यू धरती का लासानी
खेतइ मा लाइ पिआवैं मलिकिनि दुपहर मा पानी
गरमी जाड़ा अउ बरखा देहीं पर अगनि बितावैं
जब बढति फसल का देखइ रहि रहि जिउ का हुलसावैं

बिल्लाइं पसू घामे ते तजि घास छाँह का भाजंइ
खेती के सिह मुला जइ मौसम का रौंदंइ गाजंइ
जब शहरातू कूलर मा आपनि दुपहरिया काटंइ
किसनऊ पेट के गड़हा लइ हाथ मठेई पाटंइ

श्रम की सम्पति के राजा बैलन का चारा डारंइ
सुरजन का फिरि जलु दइके पेटन के मूसे मारंइ
जब थमइ घाम भैंसिन का गौतलियन मा नहवावंइ
रुपियन की चाह निसाचरि घिउ बेचंइ माठा पावंइ

जो चहै लेइ करि इनकी झलकति पसुरिन की गिनती
खेतंइ हंइ इनके ईसुर श्रम की इकलौती बिनती
जइ देउता साँच जोगी नित करम करंइ सुख पावंइ
जब घरी दुइ घरी बैठंइ बरखा मा आल्हा गावंइ

झींगुर झिल्ली झंकारंइ नेतन अस दादुर बोलंइ
छपरा ते पानी टपकइ रस औंर घरैतिन घोरंइ
जब खूंड लिहे जइ आवंइ शहरन मा बेचइ आपन
तउ जाड़ा गर्मी बरखा मारंइ इनका निज सापन

खुद बिकंइ हाट मा मद्दे मुलं बेंचंइ छुट्टी पावंइ
डल्लप होतइ खन पिन्चर राहइ मा राति बितावंइ
ट्रकटर ट्राली कै पुरजा बनबाउति समज नसावै
सिसतिरी मजूरी दूनी इनका समुझाइ बतावै

हँइ बैंक खजाना इनके कुछ दुकनदार सहरन के
उनकी बिजनिस के सोता आँइ नेता इन अँचरन के

जब देखँइ ई सब ठगुआ तउ कहँइ सेठ जी आबउ
आपन नौकर ते बोलँइ पंखा की चाल बढावउ
जइ हँइ दधीच के लरिका इनकी हइ अजब कहानी
ना चलइ रितुन की इन पर हठ कइके कुछ मनमानी
जइ समउ भरँइ अँजुरी मा भगवानउ इनका मानइ
चीरँइ धरती की छाती पथु जानँइ चाह न जानँइ।

जब निकरँइ घर ते बहिरी तउ बैलि देखि हुंकारँइ
छुटपन मा उछरति बछरा पायेन मा डुम्मी मारँइ
दुइ पाँयेन पर हुइ ठाढ़े बकरा तब आँखी काढ़ँइ
लौकी कुम्हड़न के बिरवा छपरन पर बोढ़ँइ बढ़ँइ
दोसरि हइ इनकी दुनियाँ फसलँइ हँइ इनकी कबिता
जइ कृषी समर के जोधा धरती के राजा पविता।

अइसे बना आधुनिक नेता

कक्षा दस मा पहुँचा लरिका जब सपलीमेन्ट्री आइ गयी
गुंडा गर्दी की चौखटि पर अगिली कक्षा पहुँचाइ गयी।
फस्टियर भवा रेस्टियर और पढ़िबे बदि नानी मरै लाग
सिटिया बाजी नेतागीरी परि कै संगति मा फरै लाग।
घंटन का बाईकाट किहिसि घूमइ लागा जोरे जमाति
हुइ ठाँढ़ गाढ़ चहबच्चा मा यह है कुसंग की करामाति।
बीड़ी सिगरेट सुलफा शराब धीरे धीरे रोटीन बने
बसि देंही मा हाँडइ देखान घूमँइ मुल छाती खोलि तने।
कुछ सड़क छाप लरिकन से मिलि नारा दुइ चारि लगाइ दिहिनि
फिर एक दोस घंटी अपनँइ नौकर का झिड़कि बजाइ दिहिनि
दादा हुइगे नेता हुइगे बिद्यार्थी छाँड़ि सबै हुइगे
आवा इण्टर का इन्तहान करिया अच्छर ना दुइ छुइगे।

—सत्येन्द्र नाथ श्रीवास्तव

धमकाइ दुबरिया टिचरन का कइ खुली नकल हुइ गये पास
भइया बी० ए० मा पहुँचि गये अइके सिच्छा कै यहु बिकास
गाइडउ धरिनि मुल मिला नहीं कौनउ उत्तर जब ढूँढ़े ते
तउ कुछ औरन ते लिखवाइनि आँखी बछलरि भँइ मूड़े ते

जब छात्र संघ का बँधा जोर जइ अध्यक्षी मा ठाढ़ भये
नेता गीरी की जुगति हेतु कुछ बाघ बने कुछ राढ़ भये
चढ़ि गये दुकान दुकानन पर अउ लिहिनि हजारन मा बसूलि
होटल वाले माँगिनि पइसा गारी दस दइके दिहिनि हूलि

गाड़ी बस और सनीमा सब बिन पइसा के अपने हुइगे
परिवार देस औ' सिच्छा के बिन श्रम साँचे सपने हुइगे
जीतइ वालेन के संग भये जब जुरा चुनावन का मेला
जानति सब ना यू पार लगी बिन गुंडन के रेलम पेला

कुछ गरम रकत कुछ नरम रकत कुछ मार मार कुछ नरे नरे
हइ यहु चुनाव का दंगल अस या हँइ डाकुन कै दिन बहुरे
नेतन कै बनि के पिछलग्गू गठजोड़ किहिनि अगिली सीढ़ी
कइ रस्साकसी अलच्छन मा कुरसी मा लाइ धरिनि पीढ़ी

उनके विरोध मा जौन डटे दस बीस कतल करवाइनि फिरि
मिलिके हाकिम हुक्कामन ते आपन कब्जा भरवाइनि फिरि
अब लाज फूक पहिदे कपड़ा हुइ गये कसाई के कुत्ता
स्वारथ की भुँइ मा अनगिनती सोषण कै उगे कुकुरमुत्ता

बसि रहा जाति का समीकरन बाकी सब मुद्दा भये फेल
सिद्धान्त और आदर्श देस देखिनि छिन बित्तर माँहि रेल
साँपउ न सूँघि सकँइ इनका मुल जइ काँटइ तउ जहर चढ़इ
हइ जीभ लिहे छुरिया इनकी मंचन पर भाषण रोज गढ़इ

यू मानिति हम सिगरो तनाउ हुइ सका न हइ अब हूँ गन्धा
मुल कमलन का मिलि दाबि लिहिनि जलकुंभी के गोरख धन्धा
बिसवासु यहै हरिआई तौ पाथर के नीचे दूब बनी
हइ [illegible] का [illegible] मिसरि [illegible] [illegible] बनी

हर नियम ज्ञान का अटल रहा यू नीचे ते उप्पर आवइ
जब आगी चारिउ वार होइ तउ को आँखी मींचे पावइ
हिन्दुन को खालइ जइ खंइचँइ जब मुल्लन की जमाति पावैं
जब हिन्दुन की पावैं जमाति मूघे मुल्लन का गरिआवैं।

बातन का करैं बतंगड़ जइ चींटी के बिल मा करैं फार
मक्कारी पुलिस दलाली छल रिसबति इनके हूँइ चारि यार
हूँइ सबद सहद लिपटे इनके विष मनौ दूध कै दाँत लिहे
हइ दाढ़ी इनके पेटे मा ई अन्त हीन हूँइ आँत लिहे।

जइ धरम करम का घिनवाइनि रंडी कइ डारिनि राजनीति
जइ पइसा ते वरु ठाँढ़ करिनि साँचउ कानौ वरु लिहिसि जीति
जइ न्यायालय का हुड़बंगँइ जइ अनुशासन का करँइ भंग
जइ हवामहल जइ उजरे तन जइ मइले मन जइ बड़े नंग।

बनिये व्योपारी अधिकारी सब स्वारथ मा पाछे घूमँइ
नेता समाज के करनधार इनके चरनन का सब चूमँइ
दिन का जइ राति बताइ रहे जइ फरा फरा दिन राति करँइ
भूखे पेटन पर मारि लात जइ निन्त गरीबी दूरि करँइ।

जइ भये खरोचनि कलजुग की जइ धँसी धरम की परिभाषा
जइ सपना गान्धी बाबा कै जइ भारत की उजरी आसा।

मास्टर हुइगे

गँवडँगाँवन के रहवैया कइ मिडिल पास मास्टर हुइगे
कुछ हाई स्कूल और इण्टर मुल अच्छर छर हुइ सब धुइगे
बर्धा भैंसिन की सघति मा जो यादि रहा सो यादि रहा
खेती पाती के धन्धा मा मुल नित्त मदरसा बादि रहा

उठि परे भोर हरे नाँदन पर पशु बाँधिनि अउ हरु मचिआइनि
दस बीस हराई जोति जाति दस बजे तलकु छुट्टी पाइनि
घर का लौटंइ देहीं मिजबँइ फिरि उल्टा सूधा भरँइ पेटु
दिन भरे केरि दिनचर्या अस जस कसा कुल्हाड़ी बीच बेंटु

जब गये मदरसा हफ्फि डफिफ लरिकन ते बोले करौ काम
थकि गयेन बहुत हम घरहें मा आपन पढ़ि पढ़ि कै करौ नाम
बोलेउ तउ डंडा धरा ठौर दुपहर मा सरबतु लइ आयेउ
थोरेइ दिन रहे परिच्छा के नाँहित तुम जाबेउ फलु पायेउ

फिरि काढ़ि चुनौटी जेबे ते अनमोल तमाखू मलइ लाग
दुइ चारि और मास्टर मिलि कै बातन के फागुन फरइ लाग
गइ बिटिया भाजि फलनवाँ की बन्वा की गाइ दुधारू हइ
हइ गाँउ भरे की राजनीति निम्दा की असिली दारू हइ

भा इन्टरबलु तुम घरै जाउ तब एक जने चिल्लाइ परे
कोरी पाटी पनिहाँ बोदिका सूखी कलमैं रहि गये धरे
दहगर्दा सरबतु दुइ लोटा चेलन के घर ते घुरि आवा
बिन पढ़े बनौ ज्ञानी लरिकउ यहु आशिर्वादु उतरि आवा

हँइ संसद मा पसरे एम० पी० नित नई नीति चलबाइ रहे
मुल हियाँ रसातल मा सिच्छक सिगरी सिच्छा पहुँचाइ रहे
ई मुखजरु ओढ़े इस्पेक्टर मोटर साइकिल ते आवति हंइ
सिच्छा क मन्दिर मा लरिका खइ रोज नदारद पावति हंइ

जो बहुत करिनि इमला बोलिनि करि ठाढ पहाडा रटबाइनि
पाटी पर कइके कुछ गुटका विद्या कै गड़हा पटबाइनि
जो इस्पेक्टर का मिले गुरू जइ उनकी जेब खखोइ लिहिनि
बिन किये धरे डिपटी का दइ सन्तोष करिनि सुख सोइ लिहिनि।

कोउ किहे दुकान किताबन की पी कै शराब गरिआइ रहा
कोउ नेतागीरी मा घूमइ कोउ पुलिस दलाली खाइ रहा
कोउ बैठि जीप पर काहू की कइ रहां चुनावन का प्रचार
रोशनी करेजे मा गन्डे नित बाँटि रहा हइ अंधकार।

हइ प्रगति भई कुछ इनहूँ मा जुग धारा मा हँइ जइउ बहे
जइ खेतिहर नेता अउ सब कुछ मुल अध्यापक ना रंच रहे।
उप्पर तें नीचे लगु बिगरी रामइ जो चहैं बनाइ सकैं
अब रामउ भरधर कलजुग मा देखउ कब छुट्टी पाइ सकैं।

उइ लरिका खाली घूमि रहे जो इंट देस की नीव क्यार
जो हँइ माटी कै लोंदा अस ठगि रहे उनँइ हँइ रँगे स्यार।
अँधरे भविष्य की लकुटी जो, हँइ दिया अध की छाती कै
जो हंइ सनेह बिन कसमसाति, जो लउ हँइ टुटही बाती कै।

उइ लरिका खाली घूमि रहे जो भुंइ के पके खजाना हंइ
हंइ जौन गुरू मा कुंभकार उनते तौ भल सुलताना हँइ।
डाकुन के काटँइ कान नित्त जो नई जमानँइ हथिआवँइ
तिगडम की जिन्दा मूरति अस जइ लाज सरम सब ठुकरावँइ।

मरसिया पढँइ जइ विद्यालय इनके जिउ का हंइ रहे रोइ
जइ अगिली पछिली वर्तमान तीनिउ साखिन का रहे धोइ।
जो लरिका घर घर तें चलिकै विद्या पढिबे बदि आवति हंइ
उइ सुरजन की गरदन कटि गइ यहु सपना नित्तइ पावति हँइ।

आकाश धरा मा कहूँ होउ नउ आपन सर सधान करउ
अध्यापक सुधरँइ देस बनइ कुछ अइस जतन भगवान करउ।



राम मिश्र

गायेन जस देखेन।

फुलमतिया का दिन भरि काम

धूरि जमी पाँयन पर मोट
पँहिदे एक जाँधिया छोट।
लीखइ चमकँइ बिनठे बार
जूरा फटी किनारी क्यार।
बनियानो मा छेद तमाम
मइली जइसे धुरहा चाम।
चट्टी कबहुँ न पाइनि गोड़
पंड़रोहे अस चुये करोड़।
जह गरीब की बिटिया जाति
माँछी पाँयन धरि धरि खाति।

नींद भरे आँखिन मा गाढ़ि
डारिसि जानँउ कौनउ डाढ़ि
यहिके बदि न बनै स्कूल
अदिन गिनइ दुनियाँ करि भूल।
बेरि बेरि सुड़कइ अस नाक
घर मा गंजी रहइ जस लाँक।
झुके झुके लगबावइ धान
जमुहाई अउ सूख परान।
जाड़न सिकुड़इ ओबर बीनइ
जबरदस्त यहिका श्रम छीनइ।

नाक बहति पाथुर भइ सूखि
भई हँउतहरि पसुरी दूखि।
कोइला रगरे मुसकुर लाल
रहि रहि खजुरी करइ बेहाल।
थकइ खोड़हिला झौंरी लाइ
उप्पर ते घरु भरि अनखाइ।

हृ / सियाराम मिश्र

गायेन

मेवु अजब राखइ लुकवाइ
देखइ कबहुँ न पलक उठाइ।
दस पइसा का नाक म फूल
जेहिकी लाली कवि कैं शूल।
सूधो लेइ न कौनउ नाम
फुलमतिया का दिनु भरि काम।
अइहै कबहुँ न प्रगति धंधाइ
मनु स्वतंत्रता केर भटाइ।

अनखा कबहुँ न पाइसि माथ
समता ममता दुअउ अनाथ।
जह उन्नति की खोलइ लाज
यहि बदि कौनउ साज न बाज।
विश्व बालिका वर्ष मनाइ
मानुष खुद का रहा हँसाइ।
दुखी जगत का यहु अँधियार
जानइ कब पइहै भिनसार।

●

कवि की कलम न अब लिखि पइहै

लुजगुन आँसू - गीत मरघटी
कवि की कलम न अब लिखि पइहैं।

एक ओर कश्मीर जरि रहा दोहरे शासन की मारन ते
भागि बिखति पंजाब देस की लपटन ते अउ अंगारन ते
भेदु डारि एकला देह का रोजुइ भाषा काटि रही है
सम्प्रदाय की जह परिपाटी भाई भाई बाँटि रही है।

जब लौं खलम न होति देखइहैं
सुलगति कुरुक्षेत्र जइ सारे
तब लौं भोग कामिनी कंचन
कवि की कलम न अब लिखि पइहै।

जो हमारि जह चाह कलिन पर पीर न फटकइ आँच न आवै
जो हमारि जह चाह रकत की कौनउ होरी खेलि न पावै
जो हमारि जह चाह कि भारत वहै कबुतर फेरि उड़ावै
जो हमारि जह चाह कि अदिमी ओंठन पर मुसकान सजावै

जिअति रहैं जो चाहति आपन
हीरा उगिलति सपन कुँआरे
तउ अह हँसी मसखरी कविता
कवि की कलम न अब लिखि पइहै।

जब डोली का ढोवइ वाले हुँइ दुलहिन पर घात लगाये
मछरी-कुरसी के चिन्तन मा सरम धरम आदर्श चबाये
बहू जरँइ दस बीस देस मा नित रोवँइ अखबार बिचारे
आगी आजु तलक ना पाइनि परे अकहुला राम सहारे

यहि भारत का जोरइ वाले
जब लौं सफल न हुइहैं नारे
निरमानन का छाँड़ि न तब लौं
कवि की कलम न अब लिखि पइहै।

अइयाशी काहिली ओढ़ि कै हम यहु देस गुलाम बनायेन
पहिरि न पायेन आपन जूता भोग भोगि कै राजि गँवायेन
आँखी ओंठन को बरनन करि कवि कविता को रूप सजाइनि
आपुस मा तकरारि देखि कै गोरे आये पाँउ जमाइनि

जब लौं छँटि के साफ न हुइहैं
जातिवाद के बादर कारे
रीतिकाल अस ठकुरसोहाती
कवि की कलम न अब लिखि पइहैं।

पण्डित का उल्टा समझाउति मुल्लन का भड़काउति देखेन
बनी रहइ उनकी बपदाई यहि बदि आगि लगाउति देखेन
फूट डारि के राजि करइ की फिरि योजना रही बनि भैया
स्वारथ के सब पाठ घिनउने उइ गोला हम लगनी गइया।

मरिहैं सिक्ख न हिन्दू मरिहैं
मरिहैं जइ इन्सान बिचारे
छाँड़ि खोरहा मुवर यथारथ
कवि की कलम न अब लिखि पइहैं।

जब लौं जानि न पाइति हन यहु कविता ते रोटी ना मिलिहै
जब लौं जानि न पाइति हन हम कविता बिना सुमन ना लिखिहै
कविता जीवन पंथु बतइहै आँधी का पायल पहिदइहै
जो कमाइ की खातिर अइहै वहु कविता की छाँह न पइहै।

जब लौं लौटि न आइति हन हम
अपने आँगन अपन दुआरे
लचर सबद घुंघरुन की रुनझुन
कवि की कलम न अब लिखि पइहै।

लड़ै जाति से जाति

जब कुर्सी की दौर मा हारि गये कुछ लोग
सासन बदला देस का बदलि गये रस भोग
बदलि गये रस भोग अनगिनत पाथर लगिगे
खुद भे मालामाल भाग धुरिखन के जगिगे।
त्याग ! फंसेउ तुम कहाँ घोर कलजुग मा आयेउ
शोषण की गंगा मा गोता अफरि लगायेउ।

होम मिनिस्ट्री ते चला अल्लड़ पुलिस सुधार
आयोजक की नाव का बना सबल पतवार
बना सबल पतवार बढी ओतनी हैरानी
एकादसा नित होइ नित्त लौटइ बेइमानी
उड़ी प्रगति की हंसी नहरि दफ्तर मा रहि गइ
राजनीति की राह योजना गैलल बहि गइ।

उप्पर उप्पर एकता भीतर जहरु तमाम
तपसी भेसु बनाइ के करें लूट का काम
जनता का हुसियार करि कहैं चोर ते वाह
इन नेतन की चाल मा हुइहै देस तबाह।
का हिन्दू अउ सिक्ख सबै मिलि लडिहैं भैया
स्वतंत्रता की लासि खोदि के गड़िहैं भैया।

सिया और सुन्नी लड़ंइ लड़ंइ जाति ते जाति
रोटी कुरसी जेब बदि जोरे फिरंइ जमाति
जहं देखंइ सदभाउ कविउ मिलि आगि लगावैं
छानंइ बेमलि शराब भीड़ का नित भड़कावैं
मठाधीश निज पंथ के बनें रहंइ यहि हेतु
जेतने निरखंइ बनति कहूं खोदि गिरावैं सेतु

उत्तर प्रदेश के जड़ मन्दिर

उत्तर प्रदेश के जड़ मन्दिर स्वारथ के मुँह का भये कौर
पइठे हंइ देउता मन्दिर मा इनका ना सूझा कहूँ ठौर
टुटही मठिया के चारिउ तन जो अइली फइली जगह परी
बहुरंइ घूरेउ के दिन जग मा बहि तलिया की किसमति बहुरी

कौनउ संडास खुला छाँड़े कोउ रहा बहाइ पनारा हइ
छोटी अउ बड़ि दुइ संकन का मैदानु इ बना सहारा हइ
कुछ धनपतिया कइ दिहिनि आँखि बनिगे कमरा दुइ चारि बड़े
तब बनी कमेटी कुछ असिली कुछ नकली मेम्बर गये गढ़े

अपना का सदा जनाबइ वदि श्रम कीरति की मजदूरी हइ
बिन पइसा कौनउ काम न हइ फिरि चन्दा की मजबूरी हइ
सरपट मा बनइ देबाल लगी चौगिरदा झगड़ा होइ लाग
परमारथ पूजा धरे रहे जब स्वारथ तगड़ा होइ लाग

कौनउ लाठी लइ निकसि परा तब पुलिस पिआदे नेउते गे
झगड़ा मंजिल अउ राह बना मन्दिर के भाजि सिहउते गे
सब कहंइ कि तुमरे बापइ की परबन्धक आँसुन रोइ रहा
बाह्मन देउता सबते आगे धीरजु हइ धीरजु खोइ रहा

राखैं गे एक पुजारी जी देखइ मा सबका गाइ लगे
मन्दिर मा आपनि राजि जानि उइ करइ नित्त नौताइ लगे
बाई झारें जन्तुर बाँधैं मारण उच्चाटन करें लाग
जगु जिअइ जिआये ते उनके उनके मारे ते मरें लाग

काहू पर आवंइ बरम देव काहू का औघड़ दाबि रहा
काहू पर खेलि रही देवी कोउ अदिन देखि नित खाबि रहा
इनके फुंकतइ चिल्लाइ भजइ चाँहि जौन बिआरी हवा होइ
डाकदर बैद जब होंइ फेल तउ इनकी हिक्मति दवा होइ

रराम मिश्र — गायेन जस देखेन

कुछ समुझंइ मुला पुजारी का घर के दासउ ते अधिक नीच
ब्योपार केर जरिया मन्दिर बाह्मन की गातरि लटी घींच
जब साँझ होइ दुइ चारि जने रोजुइ मन्दिर मा जुरि आवंइ
सुलफा अफीम ठर्रा ताड़ी आपन पैसन ते पहुँचावंइ

जब भीतर मारइ जोर नशा तउ बातन के विस्तार बढ़ंइ
लीला निहारि लरिका लरिकी सब भूलि पढ़ाई यहै पढ़ंइ
सब आपनि रौटिन मा उरझे केहिका टाइम जो देखि सकै
जो सुलुगि रही यहि चठिया मा को कहइ और को लेखि सकै

यहि बिध मन्दिर मा लोटि पौटि सरधा न बढ़ी व्यभिचार बढ़ा
सब धरी रही पूजा अरचा परबन्ध कमेटी लड़म पढ़ा
लड़िकऊ पुजारी के जवान बनि काम भूत सिर आइ चढ़ा
मन्दिर की एक कोठरिया मा आखिरी गवा अध्याय पढ़ा

पाथर हइ देउता की मूरति मुल ओहिमा देउता राजि रहा
पहिलें मानुष की मूरति हइ मूरति मा अनहद गाजि रहा
अध्यातम जो सिगरा जीवन तउ मूरति पूजा लरिकाईं
हइ जौन जवानी ते सुन्दर हइ सहज सबन के मन भाईं

जइसे बचपन मा गिनतिन का गोलिन ते गिनब जरूरी हइ
मूरति पूजा कुछ वहै भाँति यहि मनुष की मजबूरी हइ
मन्दिर तउ मन्दिर तब लौं हइ जब लौं न केरायेशाला हइ
धन चहै जो करै दुनियाँ मा यहु महजिद और शिवाला हइ।

लालच मा लनिक केराये के कमरन मा कुछ जन रहै लाग
लरि झगरि जौन कुछ बना रहइ ओहिका निज स्वारथ दहै लाग
कलजुग मा कौनउ देर नहीं औरन की सम्पति हड़पइ मा
कुछ नेतागीरी अउ जमाति फिर कौन देर घुस गड़पइ मा।

हँइ बेवकूफ पूँजी लगाइ आपन मकान जो बनवावंइ
हुसियार वहै जो मुफत रहइ उल्टा मालिक का गरिआवइ
आपन बनवावा घर दइके बसि रहै केरावा हाथ रहइ
मालिक का भई तपेस्या अब [illegible] हइ कौन [illegible]

बाहेर बालेन ते रगडि झगडि जब कइसेउ सब कुछ बनि पावा
तब भीतर आगी बरै लाग कोऊ न बुझावै बदि आवा
परबन्ध कमेटी के ठलुहा गाँई बाँधे बटिया पारैं
अपने घर मा बिजुरी बारैं मन्द्रिर के खरचा मा डारैं

कुछ झूठी कीरति हित आपन पइसा ते मन्दिर बनबाइनि
नगई पाइ के मन्दिर मा आँसुन रोये अउ भरि पाइनि
धीरे धीरे सब जगह गयी ट्रस्टी जन का कब्जा हुइगा
देउता फाटक मा बन्द भये कुलु आदर्सन का सब धुइगा

हम चलेन जहाँ ते हन हुँअनइँ आपन पेटे मा पहुँचि गयेन
घर घाट न दोनउ पाइ सकेन धोबी कै कुत्ता अइस भयेन
हइ जह कौनउ की लागु नहीं बसि कलजुग की बलिहारी हइ
हम आँधर हन रुपिया हमार जस बाप और महतारी हइ

जेबन मा देउता डारि फिरैं जइ ब्राह्मन सब ते आगे हुँइ
हुँइ अगर शराबी तउ आगे सबते अब्र यहै अभागे हुँइ
सबसे स्वतंत्र सब राजा खुद जइ जगतगुरू जइ करनधार
जइ अधरम और धरम दोनऊँ जइ अपरिहार्य जई दुर्निवार

जइ अपसर तउ आगे अपसर जई डाकू हुँई जई नेता हुँइ
जइ हुँई फकीर जई मालिक हुँई जइ बाह्मन विश्व विजेता हुँइ
जब बिगरा हइ सब पग पग पर अँगुरी धरि कहाँ बताई हम
भगवान अजायब घर मा हुँइ पंडन की गाथा गाई हम।

बिरबन के धोखे स्वारथ के धरती पर पुतरा ठाढ़े हुँइ
भइ जेतनी इनकी काट छाँट केरा अस ओतनइँ बाढ़े हुँइ
जिनमा विद्यालय चलइँ हुअँउ घमकच्चरु हइ सब पइसा कै
सिगरा तलाउ यहि कलजुग मा हइ भैंसिन कै अउ भईंसा कै

यहि ते मन्दिर मा जाउ मुला ना भूलि बनौ परबन्धक तुम
नहिं तौ आपनि सरधा की बदि जइ खोदि रहे हौ खन्दक तुम

●

रामे मिश्र — गायेन जस देखेन

चलँइ चप्पल विधानसभा मा
धन्नि कुर्सी महरानी

दारुलसफा मा बोतलई खोलँई
फिरि सरकारी भाषा बोलँई।

बने यहै बेभिचार के अड्डा
भैंसि और की और को पड्डा।

अपसर माल पटाइ के लावें
बँगलन मा मिलि बाँटि उड़ावें।

कबहुँक जाइ के हाथ उठावें
कबहूँ नशा म जाइ न पावें।

जइ जनता के प्रतिनिधि भैया
जइ ग्वाला हइ जनता गैया।

होइ जौन मन्जूर रुपइया
गिद्धन अस ताकें छुटभइया।

करँइ दूरि गरीबी हवा मा
धन्नि कुर्सी महरानी।

कुरसी बाप और महतारी
कुरसी चोर डकैत जुआरी।

सब तिकड़म की धुरी यहै है
गरदन पर की छुरी यहै है।

यहि की खातिर सब नंगे हैं
ठेलम पेलम हुड़दंगे हैं।

सब हुइगे पुस्तैनी नेता
मन्त्री टिकटन के विक्रेता

कुर्सी की सब होइ आड़ मा
देस रहइ या जाइ भाड़ मा।

जह् विष ते बाढ़ि दवा मा
धन्नि कुरसी महरानी।

बादसाहियत केर अखाड़ा
देस पढ़ि रहा वहै पहाड़ा।

बड़ा छोटकवन का धरि खाइ
पईसा लिहे निआउ बिकाइ।

बड़ा वहै जो जेतना जाली
साँचु कहइवा केरि हलाली।

सुरसा अस महँगाई हुइ गइ
राजनीति बपदाई हुइ गइ।

कंकर पत्थर दारि मा कसके
नियम धरम सब रहि रहि मसकें।

लिफ्ट लगाइनि धनपति हुइगे
सब विकास भाषण मा बुड़िगे।

बाँटईं धन कुनबा मा
धन्नि कुरसी महरानी।

●

कुरसी काल भई

राजीव गान्धी की मृत्यु पर लिखित

जह कुरसी काल भई
अहिंसा फेरि हलाल भई।

सम्प्रदाय की राजनीति मा
खैंचतान मा अउ अनीति मा।

दुसमन भाई-भाई हुइगे
स्वारथ बँधे कसाई हुइगे।

बूचड़ खाना देस समूचा
मंत्री हुइगे लेंड़ी बूचा।

केहिका केहिका नसा उतरिहौ
सब बिगरा केहि भाँति सुधरिहौ।

समस्या अति विकराल भई
अहिंसा फेरि हलाल भई।

अपराधन के चहबच्चा मा
देसु बिदेसदन के गच्चा मा।

माटी पाछे रोटी आगे
सब हुइगैं बलिदान अभागे।

मिलिगे हत्या अउ कुरबानी
गोटइ स्वारथ की मनमानी।

मठाधीश राहन ते भटके
रोटी अउ कोटी मा अटके।

बगुलिया दुष्ट मराल भई
अहिंसा फेरि हलाल भई।

लिट्टे कहूँ, कहूँ सिवसेना
देस भगति का किहे चबेना।
बात कहूँ हइ खालिस्तानी
घात कहूँ हइ पाकिस्तानी।
कहूँ तीन सौ सत्तर धारा
गवा भाड़ मा भाई चारा।
तिकड़म झंझट मारकाट हइ
प्रेम नेह के मन उचाट हइ।

सफल द्रोहिन की चाल भई
अहिंसा फेरि हलाल भई।...

लूट मार कै राज हियाँ हइ
नेता आतशबाज हियाँ हइ।
जाति जाति मा नई जाति हइ
संसद ठलुहन की जमाति हइ।
दुख ते कौन रहइ बग्गर मा
कुरसी छाँड़ि मचइ को हर मा।
पइदा हुइ कौनी माटी ते
उग्रवाद हाँकइ साँटी ते।

मनुजता फिरि कंगाल भई
अहिंसा फेरि हलाल भई।

पद पर जौन करै मनमानी
चलइ मूड़ ते उप्पर पानी।

कौमउ लेइ न जुम्मेदारी
रुपिया बाप और महतारी।

रक्षक भक्षक बनि के ठाढ़े
जो उजरे उइ अउरउ गाढ़े।

रहइ महल मा दादागीरी
अक्किलि रोवइ सहइ फकीरी।

ठगी उन्नति की ढाल भई
अहिंसा फेरि हलाल भई।

सब गावैं एकता गीत

सब गावैं एकता गीत
मीत हियाँ कोई नहीं।

बड़े देस सब मिलि मिलि आवैं
मानवता की ढोल बजावैं।

भीतर-भीतर आँधर बनि कै
अस्त्र सस्त्र दिन रात बनावैं।

होंइ चीन, अमरीका कोई
खाँइ नहीं रोटी अनरोई।

मुँह मा और पेट मा औरइ
नेह प्रेम की फसल न बौरइ।

जो जेहिका तनिकउ धरि पावइ
देइ पटकना बाज न आवइ।

नीति नियम सब किस्सा हुइगे
कूटनीति के घिस्सा हुइगे।

जाँइ सबइ सबके देसन मा
बाँधि बघनखा निज केसन मा।

सब आपुस मा भयभीत
गीत हियाँ कोई नहीं।

मंचन पर जब नेता बोलंइ
निज समता की पुडी खोलँइ।

नीचें उतरें जाति विचारँइ
लाठी साँप दुअउ का मारँइ।

अउरउ आगे पण्डित मुल्ला
रारि करावें खुल्लम खुल्ला।

आपनि रोटी बेमलि चलावें
लिफ्ट बैठि उप्पर का आवें।

कइसेउ मिलइ मिलइ मुल गद्दी
चहंइ होइ जइ दुनियाँ रद्दी।

मछरी के निआउ हइ जग मा
गड़े शूल हंइ सूधे पग मा।

उजरइ चहूँ बसीत
नीत हियाँ कोई नाहीं।

चूल्हे चकिया के चक्कर मा
स्वारथ अनरथ की टक्कर मा।

कविता बनि छुछुआइ छछून्दर
रीति काल फिरि मस्त कलंदर।

धरमगुरु जन जन का बाँटिनि
देस एकता समता चाटिनि।

गायेन जस देखेन

मर ते बड़ा कुफर का मानिनि
सम्प्रदाय का श्रेष्ठ बखानिनि ।
रामायन पढ़ि भाई मारिनि
लछिमन भरत दुअउ का तारिनि
राम इमाम जुगल भे नेता
दल दल मा फँसि गे अभिनेता ।
बेइमानी मा आगे हाजी
पण्डित और पादरी पाजी ।
करँइ पुरिखन की मट्टी पलीत
मीत हियाँ कोई नहीं ।

अब के किसान

जब तीनि बरस लगु फेल भये भइया बचाइ कक्षा दस मा
तब हारि गई हिम्मति उनकी अब रही पढ़ाई ना बस मा
संझलौखे कोइरे घर बइठे तउ ककिया ते बतुआइ चले
अब करँइ किसानी जुटि हमहूँ जिउ का नभ मा दौराइ चले ।
बोले बप्पा करि करि मरि गै ना तनिकउ उन्नत करि पाइनि
दिन राति अधँ अम रम्भे तउ मूल बक्खारी ना भरि पाइनि
बैलन का बेंचि लेउ ट्रैक्टर उठि अब नइ मनो किसानी गइ
जोतति बोउति दुइगो बेराम मज़ चारि खेत मा धानी भइ ।
खेतइ मा खोदिनि जब कुइयाँ दुइ बिगहा सींचि उखारी भइ

गावैन जस देखैन

बनि तीनि मटा जगु राव सकी जानउ जइ उन्नति भारी भइ
यहु लरिका नवा बिसुरु दिहिसि बोला अब बोरिंग करवावउ
चौगुनो फसल कइके पइदा ललु पूर किसानी कै पावउ।

अब गाँउ सरग बनिहैं यहि बिध छपरन मा हुइहैं महल ठाढ़
खेती बनिहै व्योपार सघन हुइहैं शहरन ते गाँउ गाढ़
करजा की फिरि दरखास एक दइ दिहिसि ग्राम सेवक कहियाँ
बोले उइ बड़ी कठिनई हइ जइ दुखद कर्ज कै छमछहियाँ।

लरिका बोला तुम सेवक हौ सेवक बोला पइसा परिहैं
बिन लिहे बी०डि० ओ० साहब जी कागद पर दसखत न करिहैं
जो जोगवा धरा जुगाविन तै ऊ रुपिया घर ते लइ आवा
पइसा तउ मिलिहैं तब मिलिहैं सब घर की पूँजी दइ आवा।

चढ़ि गइ जमीन सब करजा मा जो गड़ा तुपा सो सब लुटिगा
नत्र पाइनि इंजन दौरि धूपि जब इंजन धीरज का छुटिगा
खुस भवा और तुरतइ बोला टाइम देखइ का घड़ी चही
जब इञ्जन चलइ केराये पर दपकइ का टार्चउ बड़ी चही।

भइ पहिलि फसल पइदा जबहें बोराइ गवा रुपिया देखिसि
जानिसि दुनियाँ का भुनका अब खुद का एकइ रहीस लेखिसि
जो चतुर समेटइ अउ ओढ़इ जब होंइ पाँउ बड़ चादर तै
अरई अउ हिकमति दुअउ थकँइ मुल काम परइ जब सादर तै।

बनि गये सूट हुइगा बाबू कपड़न मा धूरि लगावइ को
हइ मलिसि क्रीम जेहि देंही मा ओहिमा चीरा लगवावइ को
जहु एक प्रवाह बहइ जीवन कहुँ रुकइ नहीं सुस्ताइ नहीं
उन्नति के पथ मा जहु मानुष चलिबे बदि कबहुँ अघाइ नहीं।

मेहनति ते जौन बोराइसि जिउ बहु करिसि किसानी भरि पावर
हइ एक मियान म कौन भला तरवारि हियाँ दुइ धरि पावर

जब भरभर साउन जलु बरसा उमड़ाइ चली तलिया अघाइ
जो एकरस ना राखिसि जिउ का बहु अदबदाइ हइ ललचाइ ।

जह गाढ़ि तपस्या तपसी की ना हँसी खेल जानउ यहिका
खपड़ी पर गाज मौसमन की अति कठिन पंथु मानउ यहिका
ढेबरी को जौन उजेरु रहइ बिजुरी पइबे मा गवा चला
सीढ़ी के बिना अकास छुयेन मेहनति बिन बिरवा कौन फला ।

हइ फूस तपाई अस करजा यहिमा कुछ लाउ न लच्छन हइ
हइ गरम तवा की बूँद एक यहि ते कौ भवा अकच्छ न हइ
किस्तइ जब सत्रह पछेलि गयीं दिन पर दिन बढ़ति रहा करजा
तब भरभराइ कँ बढ़ा सूतु निकसे जनु भुँइ ते देउगरजा ।

खेती कै फिरि नीलामी भइ ढोलकउ गयी अउ खाल गई
लम्बी धोती मोटर साइकिल अति जीवन कै जंजाल भई
खेती मेहनति की महतारी खेती ना खाला को घरु हइ
माटी का करम पसीना हइ जो हर सवाल कै उत्तरु हइ ।

●

पहिचानी गई

एकहि बार उडेलि कै सागर
मानहु भुंइ सिगरी रंगि डारी।
मारि गुलाल अकास भरा
अरु बादर श्याम करी पिचकारी।
बूझत हैं होरिहान ते ग्वाल
कहाँ निज त्रास की आस बिचारी।
आँखिन कोरन फागुन खेलत
भीतर खेलत कृष्ण बिहारी॥

वीचिन वीचिन ते लपटाय
बिछाय चिनौनि कै चादर कोरी।
देखि रहे झुकि कै सब पादप
कूलन बाँहन मा जनु गोरी।
बोलि रहीं चिरिया जल कै
सब लाज गुमान के बन्धन तोरी।
गोप बने जल तारक मस्त
निशाकर मोहन खेलत होरी॥

घर ते निकसी जो नवोढ़ा नई
लइ नूपुर हाथ लजानी भई।
भई अंग की ढीली कमान मनो
रंगी गोरी के रंग जवानी नई।
उरझे सब बार झुकी पलकें
मिलि व्यंग करे नंदरानी कई।
दइ तानो जेठानी कहैं हँसि कै
पहिचानी गयी पहिचानी गयी॥

हूक बरै हमरे हिय मा
हँसि बोलि के कोउ मनेहु अगइहै ।
हिलिहै कौन करेजो निछोहि कै
कइ कबौ छोटि कै यौवन अइहै ।
कौनी दसा बिलिहै सजना
अब नागिन राति हमैं डसि खइहै ।
खेलिहै पी पिचकारी कहूँ
मरो फागुन दूरि खड़ो पछिताइहै ॥

●

दोहे

कुत्ता बाँवर ओर तुम भूलि न देखउ खोरि
खिरि करइ भौंकइ तुरत या फिरि खाइँ भंभोरि ।
होलि भोरहरे मण्डपी बादर अगर देखाइ
दुपहर लगु औंधो रहइ और बरसि के जाइ ।
काटैन गिन गिन के दिवस होरी पहुँची आय
भौजी मइके चलि भजीं यहु दुख कहाँ समाय ।
लरिका लरिको बैस बढ़ि जो बिआहु हुइ जाइ
रूप रहइ अलगटु परि रहि रहि प्रेम छछाइ ।
होइ नखरही मामिली बाहेर होइ बजार
तापर पड़ुआ गोड़ जो कबहुँ न होइ उबार ।
दरवाजे ते निकरि जो खेतो सकल देखाइ
बखारी अहनी रहइ छिन छिन मनु हरिआइ ।
होइ चौतरा और जो हरिआली कै बास
चौनिगा आँगन बड़ा घर वर सबै सुपास ।
सम वय केरी मित्रता अउ समता कै बैर
शुभ बिआहु मन भाउ कं सदा रखावँइ खैर ।

गाथेन

होइ चातरा पर मेघी ओहके स्यामा गाइ
लरिकन का लइक नहीं कबहुं वैद घर जाइ।
तुलसी कै जंगल जहाँ, नहीं चिलम की बानि
खाँसी खुर्रा के बिना सोवउ लम्बी तानि।
होइ नखरहा कामिनी और जो तगडो होय
उप्पर ते गुस्सैल जो तउ दुग्न राखौ गोय।
बड़ी कठिनता से मिलइ यहि जग मा शुभ जोग
रूप मिलइ तउ घर नहीं जो घर रूप न भोग।

हुइ जाइ पूत डिपटी तुम्हार

बाहेर फकीर रिरिआइ ठाढ हुइ जाइ पूत डिपटी तुम्हार
भीतर भूंखेन मा लरिका का हुइ आवा भुखजर या अजार
दूधन पूतन ते फरौ नित्त यू काढ़िसि आसिर्वादु नवा
तब लौं केरुआ पट्टी लेहुउ अस कहिसि मनौ दइ घाउ गवा।
कप्पा काने पर धरिनि हाथ जेहिमा ना लरिका ना सुनि पावै
बाँसुरी गरीबी की फिर ते ना अब उकसौंधी धुनि गावै
चिल्लाइ परा तब लौं लरिका रोटी रोटी रोटी रोटी
महतारी बोली काल्हि मिली पुतुआ चुपाउ मोट झोंटी।
हम सोची का बनिहैं लरिका जब रोटिन बिना बेराम परा
कब अइहैं जोंगरा मा वालौ कब भेंटिहै कौनउ दुख अँधरा
यहु आसिरबादु हमरे बदि बाबा मन्थल कै पानी हइ
हइ मौतउ बाबा मोल मिलै जिन्दगी तेल कै घानी हइ।
चूल्हे मा आगि न दइ पायेन दुइ दोस बीति गे हुट पहार
बाबा तुमका हम का देई पायेन ना मांगे लगु उधार
यू हइ चौमासे कर नहिना हइ कहूं मजूरी लागि नहीं
जलमंइ के पहिले सोइ गई जागी अब लौं हइ भागि नहीं।

तुम पुरिखा हउ, अउ बड भगत प्रभु त यतनी अरदास करउ
यक पहरा जुरइ पिसान हमइ अस पतझर मा मधुमास भरउ
इन बाह्मन तेहि की बदि गलानि अब लौं ना किथेन मजूरी हम
जूठे गिलास अब रहेन धोइ पायेन ना तहूँ सबूरी हम

बड़कवा मजूरी करिबे बदि चौराहे पर नित होइ ठाढ
मुल आवइ ना कौनउ परोस हइ मजदूरन की भीर बाढ
यकु तौ जो जानइ यू बाह्मन दूरिय ते वाईकाट करइ
ई पडिन बड़े निकम्मा हंइ कहिके दिन बारा बाट करइ

हंसि के टारंइ ई पंडित जी दम नकन्नारइ ई पंडित जी
संघी मारंइ ई पंडित जी सब दुतकारंइ ई पंडित जी
भ्रगु जी के बदला खूब मनौ कलजुग मा यू भगवान लिहिसि
सबके सबदन के वामन ते कसि बाह्मन पर संधान किहिसि

दुनिया इनका विद्वान कहइ सरकार कहइ शोषक अमीर
हमका अब जुरइ न रोटी मुल इन बाबा तुमते बड़ फकीर
सल्लाह देउ तुमहें हमका का कहि लरिका का बेलमाई
जब घर मा आटा के लाले तउ कहाँ दवाई हम पाई

मरमिया पढति जइ विद्यालय को पढ़ि इनमा डिपटी बनिहैं
ना जुरिहइ ट्यूशन बदि पइसा ना ज्ञानु चाँदनी बनि तनिहैं
हुइहैं अच्छर ते भेंट नहीं चलिहैं पसुरी सब ठकर ठकर
बदि मीरा के जो तडपडाइ तुमरे न कहे मिलिहै शक्कर

कटिहैं कन्ना अब कनकौआ कुछ दिन कहि कहि के डेरबायेन
भूखेन को सोइ सका जग का अग्रहाग भयेन अउ पछितायेन
मझिलवा खैंचि रक्सा कैसेउ पेटन कै गड़हा पाटि रहा
हम चारि बरन मा ऊँचे इन, यू लिहे बड़प्पन चाटि रहा

आँसू बनिकै बाहेर हुइगे अब लौटि सकी अइ ताब न हइ
रूखा सूखा बसि भरइ पेटु डिपटी बनिबे को ख्वाब न हइ
लरिकिनियाँ दुखिया देखि रही रक्षा बन्धन बदि हुआँ रहा
भाई मनुमारे बइठ हियाँ दुइ दुइ पइसन बदि भरइ आह

ससुरे कै ताना उप्पर ने दुखिया लठिन की खाइ मारु
कइसे हम बिदा कराइ सकी यहु आँसुन को दिल तोरि तारु
बिटिया गरीब घर न जलमइ यहु आशिर्वाद देउ बाबा
जिअतइ आँसुन के कफ़न मा ना बनइ जिन्दगी पछतावा।

मानइ ना जानि भेद तनिकउ यह निर्धनता स्वच्छन्द रहइ
डाहइ सबका, यहि बदि कौनउ धरती की राह न बन्द रहइ
कौनउ गरीब की जाति नहीं यहु बे मकान अउ बे जुबान
हइ घृणा दलिद्दर बाँटि रही अकुताइ रहा भारत महान।

संसद मा बाह्मन हइ शोषक बाह्मन समाज को नाश किहिसि
बाह्मन बोरिसि तारिसि बाह्मन, बाह्मन अपने का नासि किहिसि
यू राजनीति का दाँउ पेंच यह है कुरसी की बलिहारी
यू छाड रहा बाह्मन धंटिया बाबा से बोली महतारी।

मुरली वाले का यह बाह्मन भगवान बनाइसि पुजवाइसि
ठाकुर जी का करि विश्वनाथ घर घर के उर मा बैठाइसि
मुल जह कलजुग के बलिहारी हइ खाइ रहा सबकी गारी
जो संग जनम से मौत तलकु ओहिका नफरत के अधिकारी।

कमजोर अंग की मददि करौ मुल सबल पुष्ट का काटउ ना
ना और करउ गहिरी खाई है करनधार जो पाटउ ना
जब लौ समान सब ना रहिहैं भारत के सावधान रहियौ
तब लौ जड़ रहिहैं जाति पाँति अउ आरक्षण कै परछहियाँ।

हिन्दी दिल हइ अउ गुरदा हइ

जनतंत्र क्यार का ब्वाख्या हइ जो नहीं अपनि हिन्दी भाषा
बिन जर के कौन भला बिरवा जो बीज नहीं तउ का आसा
भारत कै प्रानन की बानी हिन्दी जन मन कै कल्यानी
हइ यहै सभ्यता अउ संस्कृति यह धरती कै चूनर धानी

यहिमा कबीर की बानी हइ यह है अभेद का दरवाजा
हइ जोग्य देस की भाषा यदि सब सीखि सकंइ रानी राजा
बलु कइके ना रोकउ यहिका भाषा हइ गंगा कै धारा
सब बिधि पूरे अच्छर यहि के यह गौरव हइ यह उजियारा।

हिन्दु चहौ देस का तउ सीखउ जिउ चहौ देश का तउ सीखउ
जो ग्यान चहति हौ तौ सीखउ विग्यान चहति हौ तौ सीखउ
निज स्वाभिमान बदि के सीखउ, सीखउ जेहिमा अधिकार मिलइ
संस्कृति की बड़ी लरिकिनी हइ सीखउ जेहिमा भिनसार मिलइ।

तुलसी बाबा की रामइनि यहिका घर घर पहुँचाउति हइ
यह देव नदी अस पीढ़िन से पीढ़िन तक उतरति आउति हइ
अँगरेजो वहू न वनि पइहैं हइ निन्त कौन मेहमान रहा
जो बोलि न पायेन निज भाषा तौ कौन देस का मान रहा।

हिन्दी कै पाछे व्यक्ति नहीं ताकै सम्पूरन देस खड़ा
यहिका बोले ते बड़ा व्यक्ति यहिका बोले ते देस बड़ा
जो चाहि रहे हौ देस भक्ति तौ हिन्दी भाषा मा ब्वालउ
जो चाहि रहे अभिव्यक्ति सरल तौ हिन्दी भाषा मा ब्वालउ।

जो चाहि रहे हौ बनइ देस तौ हिन्दी भाषा मा ब्वालउ
जो चाहि रहे हौ सजइ देस तौ हिन्दी भाषा मा ब्वालउ
आपन भावन की ऊँचाई जो चाहि रहे हिन्दी ब्वालउ
सम्पूर्ण विश्व कै अगुआइ जो चाहि रहे हिन्दी ब्वालउ।

रसखान सूर कै गहराई जो चाहति हौ हिन्दी ब्वालउ
जो चहौ प्रकृति की अमरा हिन्दी ब्वालउ हिन्दी ब्वालउ
जो धम्म चहौ हिन्दी ब्वालउ जो भगति चहौ हिन्दी ब्वालउ
भारत की भूख मिटावइ का मलमति चाहौ हिन्दी ब्वालउ ।

सन्तन की सींची हिन्दी हइ हिन्दी माथे कै बिन्दी हइ
ना बंगाली ना पंजाबी ना गुजराती ना सिन्धी हइ
भारत कै फूल पिरोइ सकइ यहु दिढ़ हिन्दी का डोरा हइ
हिन्दी के बिना अधूरा सब जीवन के कागद कोरा हइ ।

जो लिखा जाय वहु पढ़ा जाय हिन्दी कै अजब कहानी हइ
आपन मोता का पाटि कौन यहि जग मा पाइसि पानी हइ
हंइ कोसि रहे कुछ फैसन मा जो नहीं घाट के घर के हंइ
जइ अधकचरे जुगनुन महान ना दफ्तर कै ना दूर कै हंइ ।

हिन्दी बिचार के बिरवा का बौंडाइ रही दइ दइ पानी
लिपि यहि की सबसे नीकी हइ भाखिनि हंइ ज्ञानी विज्ञानी
अपने पाँवन पर ठाढ़ रहौ यहि के बदि साधन हिन्दी हइ
हर भेद भाव का गाड़इ बदि मन का आराधन हिन्दी हइ ।

कौनउ भाषा ते द्वेष नहीं सम्मान जोग्य हर भाषा हइ
मुल हिन्दी हइ बिसवास अटल पूरे भारत कै आसा हइ
अब राष्ट्र-एकता कै विलास हिन्दी के बिना न तनि पइहै
भारत का भौन समुन्नत वहु हिन्दी के बिना न बनि पइहै ।

हइ भीख नहीं, हइ सहज भूख हिन्दी दिल हइ अउ गुरदा हइ
हिन्दी हमारि हइ साँस सबल हिन्दी बिन भारत मुरदा हइ ।

दोहे

आवति लछिमी देखि के भूलि न फरिका देउ
औसर मा चूकउ नहीं व्यवहारिक मत लेउ।
होइ दुसमनी जौन ते लरिका देउ बिगारि
सल्लति अमर कुलच्छनो कहा करइ तरवारि।
जाति धरम को भेद जो राज सभा मा होय
जानउ हइ अवनति रही आपन पाँउ गड़ोय।
जिगली खटिया और घर, वस्तु मिलै ना होय
होय पेट कै रोग नित, आयु न पूरो होय।
जेहि दिन ते दुइ चन्द्रमा या लउ कटी देखाइ
होय छीन आहार जो मौत लखौ नियराइ।
जौन कहउ खुलि के कहउ संकट का न डेराउ
यार कवितइ मा बड़ी भूल न रहइ बेभाउ।
छिन मा सब कुछ संचरइ छिन मा सब कुछ जाइ
नर अलिसय निरुपाय भूल, सब कुछ रहा बनाइ।
जानइ खन हँसि कै मिलइ अउ पाछे मुसकाय
चक्कर मा कब ते रहा, जानउ बहुत मिलाय।
पुरस्कार सम्मान का धरउ ताख मा गोय
पहुँचि राज दरबार मा दिहिसि कवितई रोय।
घटइ जगत व्योहार जो घटइ नित्त आहार
मान घटइ निज गेह मा मनी मरन हइ द्वार।
बीड़ी कै टुकड़ा बचइ गिरा गिरावा गेह
कुछ कागद अउ लेखनी सायर नँहि सन्देह।
गरब नसावइ ग्यान का स्वारथ खोवइ मान
लछिमी तेहि ते दूरि नित जो आलस की खान।

●

आवउ मिलि जुलि निरमान करी ।

हुइगेन स्वतत्र कुछ कइ डारो
दयाखइ जेहिया दुनिया सारो ।
भरि जाँइ अन्न ते बक्खारी
ना हँसइ बिदेसी दइ तारो ।
नित नूतन अनुसन्धान करी
आवउ मिल जुलि निरमान करी ।

जन जन का पूर निआउ मिलइ
डंठल डंठल मा कली खिलइ ।
ना घुसइ भेदु अब समता मा
सब बढ़ँइ अधिकतम क्षमता मा ।
पथु प्रगति क्यार आसान करी
आवउ मिलि जुलि निरमान करी ।

आपनि जनसंख्या का रोंकी
जो गल्त करइ तेहिका टोंकी ।
यहि जातिबाद कै सागर का
बनि कै अगस्त छिन मा सोकी ।
दानव बदली इन्सान करी
आवउ मिल जुलि निरमान करी ।

जगु सुखी रहइ हम सुखी रहँइ
श्रम कै देउता ना दुखी रहँइ ।
जन जन मा पनपै देस भगति
हइ निन्त एकता मा भलपति ।
अभिमान का बरदान करी
आवउ मिलि जुलि निरमान करी ।

दइजा हइजा ना बरइ अब
दुसमन ना आँखि नरेरइ अब।
झारँइ रिसवति कै लच्छन सब
हिंसा खुलि करइ अकच्छ न अब।
ना करजा खाइ गुमान करी
आवउ मिलि जुलि निरमान करी।

●

वहै देसु हम पावैं

सहस बार जो जलमँइ भुँइ पर वहै देसु हम पावैं
नित नित होईं देवारी होरी सहर गाँउ मिलि गावैं।
सम्प्रदाय ना जहाँ बहावै व्यर्थ रकत कै धारा
दुखी गरीब पाइ के हुलसै महलन केर सहारा।
जरै प्रेम का दीपक जल थल सब का मिलइ उजारा
फन फन पर नाचँइ नदनन्दन उमगै जिया हमारा।
जहाँ घृणा अउ द्वेष कपट छल ना मिलि पैग बढावै
जहाँ सन्त रैदास भगति मा ढपली अपनि बजावै।
श्रम का कातँइ चरखा सब मिलि फिरि बरगद की छइँया
लेइँ दूध की नदी हिलोरँइ घर घर लेइँ बलइँया।
बूढे अनुभव करँइ दुआरे लरिकन मा लरिकइयाँ
साधू सन्त मुकुति क परबत अनुदिन चढँइयाँ।
छहौ रितू बनि सुखद सुहावन जहाँ प्रभाउ देखावै
जहाँ प्रगति का झडा हिन्दू मुसलिम सिक्ख उठावै।

खाइ बिदुर घर सागु कन्हैया भरि आँखिन मा पानी
जूठे बेर राम आरोगँइ जहाँ कर्ण से दानी।
होइँ न रावन जइसे जेहि थल अति कामी बिज्ञानी
हँसि हँसि खाँइ घास की रोटी प्रिय प्रताप से मानी।
अफसर नेता सेवक बनि कै सुख सम्पदा लुटावैं
आँगन आँगन तुलसी पूजा मइया सगुन मनावैं।

ऊँच नीच को जहाँ देबाले कबहुँ न माथा फोरंइ
बगुला मन न अबोली मछरी सपनेउ मा टकटोरँइ।
बगियन के लपट् डंडा मा जंगल टाँग न जोरंइ
जहाँ न खपरे के दुइ पइसा लरिका पुरिखा बोरंइ।
बहुअन का ना जहाँ लोभ के राकस निन्त जरावैं
थपको दइ दइ जहाँ सबारे बछरा कृषक हरावैं।

सहस बार जो जलमँइ भुँइ पर
वहै देसु हम पावैं।

●

दोहे

भजति भजति यहि जगत मा, मन के पाँइ पिराँइ
प्रेम बटोही राम घर तब कहुँ आइ तिराँइ।

धन की इच्छा ते बड़ी जस कै इच्छा होय
इन दोनउ तें जो बचै सुखी जगत मा सोय।

रहइ प्रेम सद्भाउ जो, रूखा सूखा खाय
मूरख छाड़े गेह अस, महलु बिआहन जाय।

उठि उठि मालिक द्वार तें, देखउ भीतर जाति
भूलि बिआहउ ना सुता, कुसल दिवस ना राति।

द्वाकउ ब्वालउ भूलि मत, चलउ राति मा राह
निंदा दींद बिहाइ के, मानुष साहंसाह।

जड छिनि छिन कुतरक करइ, बनि अक्किल की खानि
ज्ञानि बदि ब्वालइ सदा गुल अवसर पहिचानि।

साँचे तपसी फूल हुंइ, तोरि न तोरउ ध्यान
रहति प्रदर्शन के सदा, दर्शन धुआँ समान।

●

भूतनाथ का मेला

साउन का महिना और परा आखिरी जौन दिन सोमवार
रितु बरखा की परि रही सुखद हइ उप्पर ते झीनी फुहार।
गोला का मेला भूतनाथ बम बम भोले गूंजा निनाद
फटि परी भीर चोगिरदा तं भूली पीरा बिसरा विषाद॥

गंगा जल की काँउरि लादे काँधे पर झोरा धरे भये
नंगे पाँयिन लमकति आवंइ उमगनि हौसनि मा भरे भये।
जेहि वार दिष्टि डारउ उंघो बसि मूड़इ मूड़ देखाइ परंइ
फतुही पहिंदे, लुंगी बाँधे हुइ झुंडन मा समुहाइ परंइ॥

पटिया पारे कुछ मेहरारू पाछे मनइनि के आइ रही
कौनउ लहडुन पर हुंइ बइठी मंगल अउ भजन सुनाइ रही।
कोउ लिहे कबुतर पिंजरा मा हइ आइ रहा लड़बावै का
मझिली भौजी के संग चला कोउ हइ चुरिया पहिरावै का॥

कोउ लिहे जलेबी खाइ रहा कोउ हइ बीड़ो सुलगाइ रहा
कोउ हइ जवान तउ धक्का दइ मौजन मा आगे जाइ रहा।
सूसर सिलबट्टा अउ नपिया खुरपा हंसिया कोउ बेचि रहा
कोउ होमगार्ड की खाइ मार, हइ गिरह काटि के रेंछि रहा॥

कोउ लिहे पसाही के चाउर काजर आँगे हइ आँखिन मा
कोउ खेतुआ साने बइठा कहुँ भिन्नाइ रहा हइ माखिन मा।
कइ रहा छोड़उती हइ कौनउ पंचाइति की जोरे जमाति
कौनउ संजोग कराइ रहा, यह भूतनाथ के करामाति॥

पूरा वहु फूसन त पगिगा हइ मूतनाथ का कुआं जौ
सरधा अउ केतनी भगति वही यहि अचरज का अब कहै कौन
सक्कर बाली बरफी बिकाइ रचंउ खोआ का नाम नहीं
कोउ बेचि रहा कतरे आलू हइ हाथन का आराम नहीं

सकरीन बयार सरबतु कौनउ हइ ठाढ़े ठाढ़े बेंचि रहा
कौनउ लरिकन पर जलबलाइ पाछे ते आग गुंचि रहा
बतुआइ रहा कौनउ आपन दुख दर्द और खेनी बारी
यह नई रोशनी कै किन्लिा बूढ़े बिचार की लाचारी

कोउ पान खाइ के फक्क फक्क बीड़ी मा दमै लगाइ रहा
कोउ बइठा अपनि जमात लिहे चिलमन त लप्प उठाइ रहा
कोउ लाठी लइके गुलादार चुचुआति तेलु करिया-करिया
चिकनाइ चला अँइठे नजरा जस तवा बना घिउ की धरिया

जो लावा चूनी भूसी लगु संझलौखे तलक बिकाइ गवा
जो रहंइ साल भरि के भूले मिलि लिहे प्रेम अधिकाइ गवा।
जो पाइसि जौन तेलु खोंसिसि, मुल सबै जलेबी डाँइ बिकाइ
कोउ लिहे नासपाती आवा शिउ भोले का कुम्हड़ा चढ़ाइ॥

कोउ जोरे भीर नचाइ रहा बन्दर आपन डमरू बजाइ
कोउ बाजीगर देखाइ रहा, हइ लरिका का नभ मा उड़ाइ।
ठौरइ जोशो पत्तरा लिहे सब भूत भविष्य बताइ रहे
कोउ रोवंइ साधुन ते ठाढ़े जिनका हंइ बरम सताइ रहे॥

पहिदे बसि एकु घोटम्ना हंइ करिया-करिया नंगे-नंगे
हाथन मा चीपी लिहे चलंइ मिलि बोलि रहे शिउ हरि गंगे।
कोउ छूटि टिराली ते गइ जो मेहरारू आँसू ढारि रही
अज्ञानु सकल हइ बक्कि झक्कि घर बालेन केरि उघारि रही॥

सब मनइन की लतगोंदनि ते म्डकन का पानी गवा सूखि
कोउ कहइ कि भइया भीर बहुत अबहूँ लगि पसुरी रहीं दूखि।
कोउ ठाढ जोरि के हाथ कहइं सब दिन यारान चलति रहइ
यहु प्रेम केर जो दिया सुघर जुग जुग लौ बाबा जलति रहइ॥

धक्का मुक्की करि घूसि जाइ हू-हू करि झाँकै कुआँ कोउ
लिखि दिहिस नाउं जो मठिया पर हइ भागिमान अति भवा सोउ।
गाडी मा भरिगे भूसा अस छति पर तिलु भरि हइ साँक नहीं
मेला जवार का महाकुंभ परि पइहै यहिमा फाँक नही॥

यहु भूतनाथ का मेला हइ यहिका कुछ अजब झमेला हइ
हइ भीड़ भाड़ धमकच्चरु हइ सब कुछ हइ रेलम पेला हइ।



वहै देसु हम पावैं

सम्प्रदाय न जहाँ बहावै व्यर्थ रकत कै धारा
दुखी गरीब पाइ कै हुलसै महलन केर सहारा।
दिया प्रेम कै ज्योति जरावै सबका मिलै उतारा
फन फन पर नाचै नंद नन्दन उमगै जिया हमारा॥
जहाँ घृणा अउ द्वेष कपट छल ना अब पैंग बढावैं
जहाँ सन्त रविदास भगति मा ढपली अपनि बजावैं॥

श्रम का कातैं चरखा सब मिलि फिर बरगद की छँइयाँ
लेइं दूध को नदी हिलोरै घर-घर लेइं बलैयाँ।
बूढे अनुभव करैं दुआरे लरिकन मा लरिकइयाँ
साधू सन्त मुकुति कै परबत अनुदिन चढैं चढइयाँ॥
छहों रितू बनि सुखद सुहावन जहाँ प्रभाउ देखावैं
जहाँ प्रगति का झंडा हिन्दू मुसलिम सिक्ख उठावैं॥

औरु बिदुर घर साग कलैया जा न अँजुलिन भर पानी
कुरु खेत रन आरोगेउ जहाँ गर्ग मे दानी ।
जहाँ न गाकम गावन अइसे अनि कामो बिसानो
नमु रे देस जहाँ पर गावैं गाथा अइसे भानी ॥
जमुनार नैना सैंकर अनि के मुग सम्पदा लुटावैं
आँगन आँगन तुलसी पूजा मइया सगुन मनावैं ॥

ऊँच नीच कै जहाँ देवालइ अब न माथा फोरैं
बगुला भगत न अब मछरिन का सपनेउ मा टकटोरैं ।
बगियन के लपटू डंडा मा अंगल टाँग न जोरैं
जहाँ न खपरे के दुइ पइसा लरिका पुरिया बोरैं ॥
बहुअन का ना जहाँ लोभ के गाकन नित्त जरावैं
जहाँ नेह तें होमि सवारे बछरा कृपक हरावैं ।
सहस बार जो अलमैंड मुँह पर वही देस हम पावैं ।

